भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 | **जून** 2010 | **अंक** 6

क्या आप जानते हैं ?

कलम के जादूगरों की विचित्र आदतें

सभी जानते और मानते हैं कि लेखन का कार्य मशीनी उत्पादन नहीं है। यही कारण है कि यह अन्य सभी कार्यों से भिन्न एक असाधारण किस्म का कार्य होता है। जीवन के हजारों तत्व धुल-पचकर गेहूँ की बालों की तरह फूटते हैं और शायद यूँ होता है साहित्य-सृजन। साहित्य-सृजन करने की प्रक्रिया पर अनेक अधिकारी विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से प्रकाश डाला है। परंतु हम तो यहाँ कुछ साहित्यकारों की अजीब-अनोखी आदतों के बारे में ही आपको बतायेंगे—

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपनी रचना-प्रक्रिया को काव्य-प्रसव कहते थे। वे कविता को गुनगुनाते हुए अपने पार्थिव शरीर को ही भूल जाते थे। और यूं स्वयं नहीं लिख पाते थे। वे कविता को मधुर स्वर में गाते और धीरे-धीरे घूमते रहते, तब किसी अन्य को वह कागज पर लिखनी होती।

प्रेमचंद

उपन्यास-सम्राट् प्रेमचंद गरीबी में पले। रूखा-सूखा खाकर पढ़े और कभी भी वैभव-विलास का जीवन न जी सके। उनके लिखने का कोई समय निश्चित न था। वे शोरगुल में भी लिख लेते थे और बिना मेज-कुर्सी के ही। वह एक पुराने डेस्क पर बैठकर लिखते थे या फिर उन्होंने अपनी अधिकांश पुस्तकें एक पुरानी चारपाई पर अधलेटा होकर लिखीं।

विक्टर ह्यूगो

सुप्रसिद्ध उपन्यास 'ला मिजरेबिल्स' के रचयिता विक्टर ह्यूगो बैठकर लिख नहीं पाते थे। वह खड़े-खड़े ही लिखते थे। इसीलिए उन्होंने अपने कंधे जितनी ऊँची मेज बनवा ली थी। अनेक बार तो वह यूँ खड़े-खड़े ही 15-15 घंटे लगातार लिखते रहते और लिखते समय बाहर की दुनिया को बिलकुल भूल जाते।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

हमारे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त तो रामभक्त थे—सरल-सहृदय। उन्हें न कागज़ चाहिए, न कीमती पेन। वह तो स्लेट पर ही लिखते थे, जिसपर न काट-छाँट, न काला-पीला, बस मिटाया और संशोधन कर लिया। उसके बाद भले ही वह कीमती कागज़ों पर छपे और लाखों व्यक्ति उसको पढ़ें।

'*साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य*' से

भाङ् भाङ् भाङ् कारा...!

तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा...! अपने मानसिक-शारीरिक बन्धनों को तोड़कर उन्मुक्त हो जाओ, तुम्हारा स्वागत करेगा यह निरभ्र, अनंत आकाश। लोहे की तरह मजबूत बनाओ अपनी मांसपेशियाँ, फौलाद की भट्टी में ढालो अपनी धमनियों को, क्योंकि ऐसे ही शक्तिमान शरीर में वह मन निवास करता है जो शंपाओं एवं वज्रों से बना होता है।

एक परिव्राजक के इसी उद्‌बोधन ने देश की युवा-पीढ़ी को झकझोर कर रख दिया था। गुलामी के बोझ तले दबे-कुचले लोग सिर उठाकर खड़े गये, उनकी आत्मचेतना जाग उठी जागरण के ये स्वर आज भी गूँज रहे हैं, आज भी लोग कारा तोड़ रहे हैं, बन्धन-मुक्त हो रहे हैं, किन्तु बदल चुके हैं उनके अर्थ-सन्दर्भ। आज विकास की इस दौड़ में जिस तेजी से पारिवारिक विघटन हो रहा है, संस्कारों का क्षरण हो रहा है, बच्चे अपनी मर्ज़ी के बन रहे हैं और युवक बेलगाम; यह बन्धनों से मुक्ति का नहीं बल्कि विनाश का संकेत है जो उन्हें उनकी ज़रूरतों की गुलामी के अँधेरे में धकेल देगा। हमें सोचना होगा कि आगे बढ़ते हुए हमने ऐसा 'क्या' खो दिया जिसने वज्र-निर्मित मन को इतना निर्बल बना दिया कि वह केवल वासना-भृत्य बन कर रह गया?

अच्छा लगा, कि इस बार बच्चे परीक्षाओं में फेल नहीं हुए। नौजवानों ने प्रतियोगिताओं में बाजी मारी और कुछ ने तो प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम को छोड़कर हिन्दी का परचम लहराया। एक विकासशील देश की यह युवा पीढ़ी अपने निर्माण की जिस प्रक्रिया से गुज़र रही है उसमें माता-पिता, अभिभावकों और शिक्षा-गुरुओं की भूमिका भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जिनके त्याग-तपस्या और मार्गदर्शन में नये भारत का निर्माण हो रहा है। इन्हीं लोगों पर यह दायित्व भी है कि बच्चों-किशोरों के मनोभावों का निर्माण करें, युवकों को दिशा दें। पहले घरों में टेलीविज़न के आगमन से पहले एक पुस्तकों की आलमारी होती थी। पढ़ाई से अवकाश मिलते ही घर के बड़े-बूढ़ों की तरह बच्चे और युवक भी उसी आलमारी में अपनी रुचि की किताबें चुनते थे, पढ़ते थे, पढ़े हुए पर बातें करते थे। शिक्षित परिवारों के आपसी संवादों में कविताएँ, शेरो-शायरी के साथ कालिदास-शेक्सपियर-रवीन्द्र-प्रेमचंद-प्रसाद होते थे तो कार्लमार्क्स, विवेकानन्द और आइंस्टाइन भी। मगर आज इस तरह के पारस्परिक-संवाद नहीं रह गये, बड़े-छोटे सबके बीच कदम-कदम पर ज़रूरतें, आर्थिक समस्याएँ और किसी तरह समाधान के बाद शेष रहता है संवादहीन मौन और मुखर हो जाते हैं टेलीविज़न, बच्चों के वीडियोगेम्स, किशोरों-युवाओं के साइबर-इंटरनेट चैट्स। एक ही घर के अलग-अलग कमरों में कैद हो जाते हैं परिवार के बड़े-बुजुर्ग-महिलाएँ-बच्चे और नौजवान। जहाँ पुस्तकों की आलमारी मानसिक-शारीरिक स्वास्थ्य का कारक थी वहीं ये अलगावकारी प्रवृत्तियाँ 'जंकफूड' और 'फास्टफूड' की तरह घातक और अस्वास्थ्यकर हैं जो इस पीढ़ी को अज्ञात मनोशारीरिक-व्याधियों से आक्रांत कर रही हैं।

पिछली सदी तक वेदविद्या के ब्रह्मवर्चस् और बोधिसत्व की प्रज्ञापारमिता के संघटक तत्त्वों ने हमारे शैक्षणिक और मानसिक विकास की जो आधारभूमि तैयार की थी उसी का परंपरित

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

और जीवंत स्वरूप है हमारी संस्कृति और इसी संस्कृति का उद्घोष है कारा तोड़ने या बन्धन मुक्ति का उद्बोधन। इन्हीं मानसिक घटकों की संवेदनशील सर्जना है भारतीय भाषाओं का साहित्य, कला और संस्कृति के प्रतिमान। वर्तमान के वैज्ञानिक विकास-क्रम के बीच हम वापस लौटने की बात नहीं कर रहे बल्कि मनोभावों के परिवर्तन और वस्तुसत्य के सम्यक् विश्लेषण का आग्रह अवश्य रखते हैं। तभी हम अपने ही बनाये कारागार से मुक्त हो सकेंगे, अपनी शक्ति का आकलन कर सकेंगे और जीवन-संघर्षों के बीच उसी वज्र-मना पौरुष के बलपर आसन्न चुनौतियों को ललकार सकेंगे—

सुनूँ क्या, सिन्धु मैं गर्जन तुम्हारा
स्वयं युगधर्म की ललकार हूँ मैं!

सर्वेक्षण

● **प्रगतिशील/प्रतिगामी :** केन्द्र सरकार ने जनगणना का काम क्या शुरू किया कि पक्ष-विपक्ष के नेताओं ने जातीय-सांख्यिकी के अनुसार अपने-अपने वोटों का समीकरण बैठाते हुए जातिगत आधार पर जनगणना की माँग आरम्भ कर दी। प्रतिगामी मानसिकता के ये नेता अपने ही संसदीय इतिहास के उस प्रगतिशील अध्याय को भूल गये जब 1950 में इसी जातिगत जनगणना के प्रस्ताव को निरस्त करते हुए तत्कालीन गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्पष्ट किया था कि इससे विभाजन की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। तबसे 60 साल बाद के ये प्रतिगामी रहनुमा कम-से-कम सरदार जैसे बुज़ुर्ग से कुछ सीख लें और सामान्यजन को जाति-धर्म से मुक्त मुख्यधारा से जोड़ने की ज़िम्मेदारी निभायें, तभी सवा-सौ करोड़ की जनसांख्यिकी वाला देश प्रगति के निर्बाध-मार्ग पर अग्रसर होगा।

●● **लाल आतंक :** याद आता है 20वीं सदी के सातवें दशक का वह आखिरी दौर जब केवल देश ही नहीं दुनिया के कई मुल्कों में युवा पीढ़ी कम्युनिस्ट आन्दोलन के सशस्त्र-प्रतिरोधी छापामार गुरिल्ला-युद्ध और शहादत के रूमानी-प्रभाव से आन्दोलित थी। हमारे यहाँ भी पूँजीवादी शोषण, सामंती अन्याय-अत्याचार, भूख-गरीबी का दंश झेलते आदिवासी, दलित, किसान-मज़दूर आदि सर्वहारा-वंचित-वर्ग का सशस्त्र-प्रतिरोध नक्सलबाड़ी ग्राम से शुरू हुआ और देखते-देखते इस लाल-आँधी की चपेट में आ गये देश के कई प्रान्त और युवावर्ग को एक लक्ष्य मिल गया। सामाजिक अन्याय-अनाचार के खिलाफ, वंचित-वर्ग के पक्ष को बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, कलाकारों, पत्रकारों और युवकों का सक्रिय समर्थन भी प्राप्त हो गया। इस आन्दोलन से वामपंथ मजबूत हुआ, दुनिया के कई हिस्सों में सत्ता परिवर्तन हुए, हमारे यहाँ भी वामपंथी सत्ता में आये और उन्होंने अपने क्षेत्र में अपेक्षित बदलाव किये। सशस्त्र-प्रतिरोध का आन्दोलन सैनिक-अर्धसैनिक बलों द्वारा कुचल दिया गया किन्तु दूर-दराज़ के जंगलों में भागते हुए उन्होंने नये ठिकाने बना लिये और शक्ति-संग्रह के बाद फिर फूट पड़े हैं। इस बार उन्हें पहले जैसा समर्थन तो नहीं मिला है लेकिन आदिवासी-क्षेत्रों, और वंचित-वर्ग के प्रति सरकारी उपेक्षा उन्हें बौद्धिक-समर्थन का हकदार बनाती है।

पिछले दिनों में तथाकथित माओवादियों ने जो कारगुज़ारियाँ की हैं, दंतेवाड़ा से मिदनापुर तक जितने विस्फोट किये हैं, नरसंहार किये हैं उन्हें देखते हुए अब इस आन्दोलन को 'जनयुद्ध' के बजाय आन्तरिक आतंकवाद कहना ही समीचीन होगा। वस्तुत: यह समूचा आन्दोलन आज दिग्भ्रांत है।

दूसरी ओर विभ्रांत हैं केन्द्र और राज्यों की सरकारें, जो किसी इच्छाशक्तिविहीन, मजबूर संस्थान की तरह समस्या का समाधान नहीं करतीं, बल्कि तात्कालिक घटना-दुर्घटना के बाद लीपापोती करते हुए प्रभावित व्यक्तियों, क्षेत्रों के लिए आर्थिक-पैकेज जारी करके स्वयं निष्क्रिय हो जाती हैं और फिर जब-तब फूट पड़ता है यह आतंक। इसी लीपापोती की वजह से देश में दंगे होते हैं, आंतर और बाह्य आतंक की धौंस कायम रहती है।

उपर्युक्त परिदृश्य में हमारा नम्र निवेदन है कि प्रत्येक जन-समस्या को प्राथमिकता देते हुए उनका समग्र समाधान करें, अन्यथा कथित विकास-राग का हश्र कुछ यूँ होगा—

कैसे मंज़र सामने आने लगे हैं
गाते-गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।
अब नयी तहज़ीब के पेशे-नज़र हम
आदमी को भून कर खाने लगे हैं।

—परागकुमार मोदी

पुस्तकों का चिकित्सकीय स्वरूप

आप विश्वास करें या न करें, पर यह सच है कि पुस्तकें न सिर्फ आपको, बल्कि आपके परिवार को और सम्पूर्ण मानवता को शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यदि आप अकेलापन महसूस कर रहे हैं या आपका मन उखड़ा-उखड़ा है तो पुस्तकों की आलमारी की ओर अपने कदम बढ़ायें और अपनी पसन्दीदा किताब लेकर उसका अध्ययन करें। आप पायेंगे कि कितनी जल्दी आपका बिगड़ा मूड बनने लगता है।

कई शोध अध्ययनों के बाद ब्रिटिश डॉक्टर इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि ज्ञानवर्द्धक व प्रेरणादायक पुस्तकों के अध्ययन से आप जिन्दगी के कई उतार-चढ़ाव व मानसिक तनावों का सहजता के साथ सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। चिकित्सकों की राय में दवाओं व परहेज के साथ-साथ पुस्तकों के अध्ययन से कई रोगों से जल्दी से जल्दी निजात पायी जा सकती है। वस्तुत: पुस्तकों के अध्ययन के माध्यम से रोगी को राहत मिलने की यह चिकित्सा पद्धति कोई नई नहीं है। विश्वविख्यात यूनानी दार्शनिक अरस्तू का मानना था कि साहित्य में रोगों को ठीक करने का गुण होता है। वहीं रोमन सभ्यता के लोगों का मानना था कि औषधियों और पुस्तक अध्ययन के मध्य कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य है। आशय यह है कि यदि चिकित्सा के दौरान औषधियों का सेवन करने के अलावा मनपसन्द पुस्तकों का अध्ययन किया जाय तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिलता है। इतिहास गवाह है कि 18वीं शताब्दी तक यूरोप के बड़े मनोरोग चिकित्सालयों में पुस्तकालयों की स्थापना की गई थी। यही नहीं 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक यूरोप के योग्य डॉक्टर मानसिक रूप से बीमार लोगों की भावनात्मक समस्याओं का इलाज करने के सन्दर्भ में पुस्तकें पढ़ने की सलाह दिया करते थे।

शेष पृष्ठ 3 पर

हिन्दी हृदय की नई धड़कन

—आनन्द कुमार

यह नये युग के सूत्रपात की तरह है और इसे तो होना ही था। हिन्दी बेल्ट के लोगों ने अपने बच्चों को अब बड़े लोगों का ड्राइवर और दरबान बनाने से इनकार कर दिया है। यूपीएससी के माध्यम से भारतीय प्रशासनिक सेवा और आईआईटी में उनके बच्चों का चयन जिस तरह से हो रहा है वह हैरत में डालने वाला है। पिछले कुछ वर्षों से आईआईटी की प्रवेश परीक्षाओं में गरीबों के बच्चे धड़ल्ले से सफल हो रहे हैं। पिछले दिनों घोषित यूपीएससी के नतीजों में बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों के छात्रों के कब्जे ने मानो पूरी दुनिया की आँखें खोल दीं। यह एक तरह की सत्ता में हिस्सेदारी की भूख है और इस भूख से हिन्दी बेल्ट के नौजवान जगमगा रहे हैं। अब उनके लिए दुनिया का कोई भी लक्ष्य अभेद्य नहीं रहा। विशेष वर्ग के लिए आरक्षित माने जाने वाले क्षेत्रों में हिन्दी बेल्ट के गरीबों के बच्चे जिस तरह आ रहे हैं, उससे एक नई सुबह का अहसास हो रहा है। इस सुबह का स्वागत कीजिए।

इसे आप विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के खिलाफ वंचितों का विद्रोह कह सकते हैं, लेकिन यह विद्रोह रचनात्मक है। इससे विनाश की जगह निर्माण की धारा बह रही है। इसे हिन्दी बेल्ट के लोगों का महाजागरण भी कहा जा सकता है। ज्यादा दिन नहीं हुए, 1981-82 में छोटे शहर तो दूर राजधानी पटना से भी गिने-चुने लोग ही आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में सफल होते थे। अब तो इसमें सफलता पाने वालों की कतार लगी हुई है। अब तक जिस कोटा शहर को सर्वोच्च माना जाता था, अब वहाँ पटना और कानपुर के नाम का डंका बज रहा है। ऐसा एकाएक नहीं हुआ है। इसके पीछे गहरे कारण रहे हैं। हिन्दीभाषी बेल्ट में शुरू से ही विशेषाधिकार प्राप्त अमीर वर्ग और गरीबों के बीच की खाई गहरी रही है। चाहे वह सामंतवाद का दौर हो, या पूँजीवाद का, गरीबों को सेवक बनाने की प्रवृत्ति हमेशा से रही है। इसके लिए गरीबों या मेहनतकशों को अमीरों ने शिक्षा से काटकर रखा। सामंती अथवा विशेषाधिकार प्राप्त अमीर वर्ग को हमेशा से यह खतरा सताता रहा है कि अगर मेहनतकश वर्ग के लोग पढ़ गये तो उनकी बनी-बनाई व्यवस्था गड़बड़ा जाएगी। तब उनकी सेवा कौन करेगा? पहले तो गाँवों में गरीबों के लिए स्कूल तक नहीं होते थे। जो थे उसमें भी गरीबों को पढ़ने की अनुमति नहीं होती थी। स्कूलों में दलितों और गरीबों के बच्चों को भयानक प्रताड़ना झेलनी पड़ती थी। इसके बावजूद जब कुछ बच्चों ने अपने बल पर शिक्षा हासिल करनी शुरू कर दी तो शासक वर्ग ने एक नई चाल चली। गरीबों को शिक्षा से दूर रखने के लिए प्रभु वर्ग के लोगों ने अंग्रेजी नामक अस्त्र अपनाया। और शासन करने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान जरूरी हो गया। लगभग यह तय कर दिया गया कि इंजीनियर-डॉक्टर के अलावा आईएएस और आईपीएस अफसर वही बनेगा जो अंग्रेजी जानेगा। गरीबों के घर का माहौल ऐसा नहीं था कि उनके बच्चे अंग्रेजी पढ़ सकें जबकि अमीरों ने अपने बच्चों के लिए महँगे अंग्रेजी स्कूल खोले और इनमें पढ़ाने के लिए अंग्रेज शिक्षकों को रखा गया। यूपीएससी और आईआईटी जैसे क्षेत्रों को अंग्रेजी जानने वालों के लिए लगभग आरक्षित कर दिया गया। इन परीक्षाओं में अंग्रेजी जाने बगैर कोई बैठने के बारे में भी नहीं सोच सकता था। नतीजा यह हुआ कि हिन्दीभाषी बेल्ट के खासकर गरीब वर्ग के लोग लगातार इन क्षेत्रों से दूर होते चले गए। लेकिन ऐसा ज्यादा दिनों तक नहीं चलने वाला था। अब वह दौर आ गया है जब हिन्दीभाषी इलाके के गरीबों ने मेहनत के बल पर अपने कंधे से गुलामी का जुआ उतार फेंका है। अंग्रेजी का दुर्ग लगभग ध्वस्त हो रहा है। अब तो हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वालों की पूरी कतार लगी हुई है और ऐसे बच्चे सफल भी हो रहे हैं। यूपीएससी ही नहीं मेडिकल और इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वालों की भीड़ बढ़ती ही जा रही है। यह बात दीगर है कि हिन्दी वालों के साथ अभी भी भेदभाव हो रहा है। इस बार हुई आईआईटी की प्रवेश परीक्षा में जिस प्रश्न को हिन्दी में पूछा गया था उसके लिए 18 अंक दिये गये जबकि अंग्रेजी में पूछे गये इसी सवाल के लिए 48 अंक दिये गये। इसको लेकर देश भर में सवाल उठे लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसके बावजूद बिहार जैसे राज्य में बच्चों की सफलता में उछाल ने बता दिया है कि अब वे लोग किसी के रोके रुकने वाले नहीं हैं, चाहे कोई भी दीवार खड़ी कर ली जाए।

आप सुपर थर्टी के माध्यम से सफलता हासिल करने वाले बच्चों को देखिये। इनमें अधिकतर बच्चे ऐसे गरीबों के घर से आते हैं जिनके यहाँ रोजी-रोटी तक का संकट होता है। कई बच्चे तो मेहनत-मजदूरी करके पढ़ते हैं। सूपर थर्टी से इस बार एक ऐसे बच्चे का चयन हुआ है जिसे अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए स्टेशन पर ताड़ी तक बेचनी पड़ी। दूध बेचने वाले के बच्चे में भी सुपर थर्टी ने प्रतिभा की आग देखी और उसे तराशा। यह गरीबों के संघर्ष के सर्वोच्च रूपों में से एक है। यह हालात बदलने का ही असर है कि बड़े और महँगे अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वालों का दाखिला आईआईटी में नहीं होता और सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले गरीबों के बच्चे अपनी मेहनत से आईआईटी के परिसर में दौड़ लगा रहे हैं।

दरअसल समय बदल गया है। हिन्दी पट्टी के लोग अब जागरूक हुए हैं। अब वे अपने हक और अधिकार के लिए जूझते हैं। पिछले कुछ वर्ष से जो दृश्य सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में दिखाई पड़ रहा था, वही दृश्य अब शिक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई पड़ रहा है। जाहिर है कि अब केन्द्र और राज्य सरकार को भी इस विषय में कुछ करना चाहिए। समय आ गया है कि सरकार गरीबों के बच्चों को शुरू से ही अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था करे। इसके लिए युद्ध स्तर पर अभियान चलाया जाए, पंचायतों में संस्थान खोले जाएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भी लोगों को अंग्रेजी सीखने के लिए जागरूक किया जाए। इससे माहौल बदलेगा और अंग्रेजी पर एक खास वर्ग का बना-बनाया एकाधिकार टूटेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि इससे कई सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का अपने आप समाधान भी हो जाएगा। **—हिन्दुस्तान से साभार**

पृष्ठ 2 का शेष

आजकल ब्रिटेन में बहुत से डॉक्टर डिप्रेशन, बेचैनी और एकाकीपन जैसे मनोरोगों के इलाज में मरीजों को कुछ चुनिन्दा किताबें पढ़ने को सलाह दिया करते हैं। मरीज अपने तीमारदारों के साथ पुस्तकालयों में जाते हैं। पुस्तकालय के अधिकारी डॉक्टर के निर्देश के अनुसार विशेष प्रकार की किताबें लाइब्रेरी से निकाल कर उस रोगी को पढ़ने के लिए देते हैं। वस्तुतः पुस्तकें आपके आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं। अच्छी प्रेरणादायक पुस्तकें पढ़ने के बाद किसी पात्र या किरदार के माध्यम से जो प्रेरणा मिलती है उससे रोगी उत्साहित होते हैं। अक्सर आपने देखा होगा जब आपको किसी साहित्यिक उपन्यास, कहानी आदि का कोई पात्र अच्छा लगता है तो, आप उसे अपने खास लोगों को पढ़ने की सलाह देते हैं।

किताबें पढ़ने से आपके मन का दबाव व तनाव दूर होता है। मनोवैज्ञानिकों की राय में यदि आप पुस्तकों के पढ़ने का आनन्द उठाना चाहते हैं तो इस सन्दर्भ में एक सुव्यवस्थित व सुनियोजित योजना बनायें। इस क्रम में सबसे पहले आपको उन पुस्तकों की सूची बनानी चाहिए जिन्हें आप प्रथमतया पढ़ना चाहते हैं। फिर यह निश्चित करें कि किस तिथि से इसे पढ़ना शुरू करेंगे तत्पश्चात् आपको यह सुनिश्चित करना है कि अमुक किताब के कितने पृष्ठों को आप प्रतिदिन पढ़ेंगे। हाँ, पढ़ने का वक्त आपकी अपनी सुविधा के अनुसार ही निकालना होगा।

ऐसे तो हिन्दी का भला नहीं होगा

—नवीन चन्द्र लोहनी

यह लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है कि साहित्य में प्रयुक्त हो रही हिन्दी आज राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी से कितना तालमेल बिठा पा रही है? प्राथमिक स्कूलों से लेकर एमए और शोध स्तर तक के पाठ्यक्रमों मे आखिर हमें किस हिन्दी की जरूरत है? इन दिनों एक बहस जोर पकड़ रही है कि हिन्दी के पाठ्यक्रमों का विकास किस प्रकार हो कि इसका व्यावसायिक उपयोग और महत्त्व विद्यार्थियों को अपनी तरफ खींच सके। यहीं पर यह सवाल खड़ा होता है कि हमारे विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों सहित छोटी कक्षाओं के हिन्दी के पाठ्यक्रमों का विकास क्या इस दिशा में हो रहा है?

एनसीईआरटी से लेकर एससीआईआरटी और विभिन्न निजी प्रकाशन संस्थानों द्वरा छोटी कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित किए जा रहे हैं। कई निजी स्कूलों में तो पाठ्यक्रम लागू करने में प्रकाशन संस्थान की रुचि-अभिरुचि अधिक होती है, सम्बन्धित संस्था की कम। उसका कारण यह है कि प्रकाशन संस्थानों द्वारा स्कूलों के पाठ्यक्रमों को अपनी तरह से ढालने की कोशिश लगातार चलती रहती है। वे जिन लेखकों से पुस्तक तैयार कराते हैं, चाहते हैं कि किसी तरह से वह पाठ्यक्रम का हिस्सा बन जाएँ। इसके लिए कई प्रकाशक स्कूलों में जाकर सम्बन्धित विषय के शिक्षकों के पाठ्यक्रम की कार्यशाला आयोजित करते हैं। इसका लाभ स्कूल, कॉलेजों को हो या न हो, पर प्रकाशक वर्ग और कई बार संस्था के जिम्मेदार अधिकारियों को होता है।

प्रारम्भिक कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में यह बात अवश्य ध्यान रखी जानी चाहिए कि उससे छात्र की अपनी कल्पनाशीलता, रचनात्मकता का विकास तो हो, पर वह केवल वायवीय दुनिया में ही न घूमता रहे। चयन में कोई कविता या पाठ इसलिए नहीं शामिल किया जाना चाहिए कि सम्बन्धित लेखक का बड़ा नाम है, बल्कि उनका समावेश इसलिए हो कि वे रचनाएँ जीवन जगत को समझने में विद्यार्थी को बेहतर नजरिया दे सकेंगी।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के तहत उच्च शिक्षा के स्तर पर हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रम का जो विकास हुआ, उसमें पत्रकारिता, प्रयोजन मूलक हिन्दी के पाठ्यक्रमों को ले आया गया, इनमें कम्प्यूटर और अनुवाद की सामान्य जानकारियाँ भी मौजूद हैं। अनिवार्य और वैकल्पिक पाठ्यक्रमों पर भी नजर डालें, तो पाते हैं कि इसके पीछे यूजीसी का निहितार्थ यही था कि छात्र केवल साहित्य ही न पढ़ें, बल्कि साहित्य से जुड़े तमाम अनुशासनों से परिचित हों। कई विश्वविद्यालयों ने पाठ्यक्रमों में किए गए बदलावों को देर-सबेर शामिल किया। लेकिन अब भी देश में ऐसे अनेक विश्वविद्यालय हैं, जिन्होंने आयोग द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमों की रूपरेखा में कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई है और वे अपने स्तर पर निर्धारित पाठ्क्रम आज भी चला रहे हैं।

पाठ्यक्रम के विकास और उनमें निरन्तर बदलाव की जरूरत इसलिए होती है कि किसी विषय में हो रहे नए शोध और जानकारियों से विद्यार्थी व पाठक परिचित हो सकें और समीक्षा की अगर कोई नई प्रणाली दिखाई दे, तो उसका भी लाभ उठाया जा सके। हिन्दी के पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि इनमें आज भी गैर हिन्दीभाषी क्षेत्रों के हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं को उतना महत्त्व नहीं मिल रहा है। इतना ही नहीं, विदेश में रहने वाले हिन्दी रचनाकारों के प्रति भी पाठ्यक्रमों का नजरिया उदासीन ही है। परिणामस्वरूप, गैर हिन्दीभाषी राज्यों तथा देश के बाहर लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य से विद्यार्थी वर्ग अपरिचित है।

भाषा के विकास में साहित्य के विकास को भी आवश्यक माना जाता है। मीडिया द्वारा विकसित की जा रही हिन्दी तथा जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हो रहे उसके रूप से लोग परिचित हो रहे हैं, चाहे समाचार चैनल हो, मनोरंजन चैलन हों या फिर ज्ञान-विज्ञान, आस्था से जुड़े विभिन्न समाचार माध्यम। विज्ञापनों, फिल्मों, इंटरनेट, ब्लॉग, ट्वीटर, फेसबुक सहित अन्य जगहों पर भी हिन्दी के इस्तेमाल की सम्भावना निरन्तर बढ़ रही है। इस बढ़त को बनाए रखने के लिए जरूरी है कि हमारी प्रारम्भिक कक्षाओं के स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक भाषाई तथा साहित्य से जुड़े पाठ्यक्रमों में हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय विकास को सही रूप से शामिल किया जाए, तभी दुनिया में हिन्दी के विकास के नाम पर हो रही कोशिश को कामयाबी मिलेगी।

जब तक हिन्दी को विकासोन्मुखी दृष्टिकोण से अपनाने के लिए तैयार नहीं किया जाएगा, तब तक उसके विकास के अपने दायित्व का हम सही निर्वाह नहीं कर सकेंगे। पाठ्यक्रम निर्धारण करने वाली समितियाँ जो शैक्षिक उद्देश्य इस पाठ्यक्रम के माध्यम से लेकर चलती हैं, वह पूरा हो रहा है अथवा नहीं, इस पर भी विचार किया जाना चाहिए। **—अमर उजाला से साभार**

पढ़ने से सस्ता कोई मनोरंजन नहीं, न कोई खुशी उतनी स्थायी।

शीघ्र प्रकाश्य

योगिराजाधिराज श्री श्री विशुद्धानन्द परमहंस

लेखक

अक्षयकुमार दत्त गुप्त कविरत्न

एम०ए० (रायबहादुर)

अनुवादक : **एस०एन० खण्डेलवाल**

महान् साधक रायबहादुर अक्षयकुमारदत्त गुप्त प्रणीत 'योगीराजाधिराज विशुद्धानन्द परमहंसदेव' का भाषानुवाद प्रस्तुत है। यद्यपि पहले भी इन महायोगी की जीवनगाथा प्रकाशित हो चुकी है तथापि उनके जीवन के अनछुए प्रसंगों का तथा उनकी जीवन-यात्रा के सामान्य क्षणों का जो हृदयस्पर्शी विवरण इस ग्रन्थ में है, उसका वैसा स्वरूप अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। महान् लोगों के जीवन की एक छोटी से छोटी घटना भी जनसामान्य के लिए पथप्रदीप का कार्य करती है। दिशाहारा व्यक्ति उसी से अपना मार्ग प्रशस्त कर लेता है। जैसे प्रकाश की एक सामान्य किरण भी वर्षों के छाये गहनान्धकार को क्षणार्ध में विदूरित करने में समर्थ रहती है, वैसे ही महापुरुष के जीवन की एक क्षुद्रतम घटना भी व्यर्थ नहीं होती तथा उससे भी मानव के हितार्थ सन्देश प्रसारित होता रहता है। यह निर्विवाद है।

यह ग्रन्थ एक दैनन्दिनी (डायरी) के समान है। महापुरुष की नित्यप्रति की घटनाएँ इसमें सँजोई गयी हैं। वर्णन-शैली रोचक तथा भावपूर्ण है। यह निश्छल-निष्कपट भाव का तथा भक्तिपूर्ण हृदय का उद्गार है। इसलिए यह सार्वजनीन है, क्योंकि इस प्रकार के भाव सबके अन्तरतम का स्पर्श करते हैं, पाठक का संवेग भी लेखक के भाव में भावित तथा आकारित हो जाता है। यही यथार्थ जीवनी की, 'चरितकथा' की कसौटी है।

आशा है इस ग्रन्थ के भाषानुवाद के प्रकाशन से कर्म मार्ग का अनुसरण करने वाले साधकों का प्रभूत लाभ होगा।

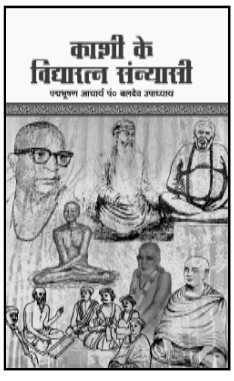

ISBN : 978-81-7124-668-7

काशी के विद्यारत्न संन्यासी

पद्मभूषण आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय

मूल्य : रु० 60.00

पृष्ठ :132

अब तो बात फैल गई

कान्तिकुमार जैन

'' हिन्दी के संस्मरण साहित्य को नई ऊँचाई, गहराई और व्यापकता देने वाले कान्तिकुमार जैन ने प्रस्तुत पुस्तक में संस्मरण विधा के सर्वथा नये प्रयोग किये हैं। किसी को बिना देखे या मिले उसके परिवेश को केन्द्र बनाकर क्या संस्मरण लिखे जा सकते हैं? कान्तिकुमार का उत्तर है—हाँ। ''

आकार डिमाई

प्रकार सजिल्द

पृष्ठ 264

ISBN : 978-81-7124-586-2 • मूल्य : रु० 250.00

(पुस्तक के एक संस्मरण का अंश)

नज़ीर अकबराबादी

ताजमहल के पिछवाड़े का कवि

ताजमहल सामने से कई बार देखा था, भीतर से भी। सोचा—इस बार देखा जाए, उसका पिछवाड़ा कैसा लगता है। हॉलीवुड अभिनेत्री मेरीलिन मनरो के बारे में कहा जाता है कि वह सामने से जितनी आकर्षक थी, पीछे से उससे भी ज्यादा। सोचा, क्या पता, ताज को पीछे से देखने पर उसके सौंदर्य के कुछ नए पहलू नुमायां हों। इस बार के आगरा-प्रवास में ताज बीबी का मकबरा देखने का मेरा चाव उतना नहीं था, जितना नज़ीर मियां की मज़ार देखने का था। शायद यह बढ़ती उम्र का तकाजा हो। ताजमहल यौवन में देखने की चीज है और मजार बुढ़ापे में। सुन रखा था कि नज़ीर मियां का मक़बरा कहीं ताजगंज में है—ताजगंज जो ताजमहल के पिछवाड़े का एक मुहल्ला है। जब ताजमहल बन रहा था तो ताजमहल तामीर करने वाले संगतराश, छेनी-हथौड़े से काम करने वाले कारीगर, ईंट-पत्थर ढोने वाले मजदूर और इसी तरह के तमाम लोग झुग्गी-झोपड़ी डालकर वहीं ताजमहल के पिछवाड़े रहने लगे थे। ये सब लोग थे तो इनकी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए फेरी वाले, खोमचे वाले, नानबाई, भिश्ती, कसाई, परचूनिये भी अपनी रोजी-रोटी के चक्कर में वहाँ इकट्ठा हो गए थे। निम्न मध्यवर्ग और गरीब-गुरबा का भरा-पूरा मुहल्ला-आगरे का ताजगंज।

नज़ीर मियां जब बाइस-तेईस साल की उम्र में अहमद शाह अब्दाली के हमले के कारण अपनी माँ और नानी के साथ दिल्ली से उखड़े तो उनको यहीं ताजगंज में नूरी दरवाजे में पनाह मिली। नज़ीर के जीवन का शेष सारा हिस्सा यानी कोई 75 साल का लम्बा समय ताजगंज में ही बीता। मरने के बाद वे यहीं दफनाए गए। मियां नज़ीर को जीवन की हलचलों से इतना प्यार था कि उन्होंने मुर्दों के बीच कब्रिस्तान में दफनाए जाना क़बूल नहीं किया। उन्होंने अपनी जिन्दगी में आस-पास के लोगों में एक खास मरतबा हासिल कर लिया था। वे लोगों के हो गए थे और लोग उनके। मुहल्लेदारों को नज़ीर के बिना अपनी जिन्दगी अधूरी लगती थी। सो उनके मरने के बाद भी उन्होंने मियां नज़ीर को अपने से दूर नहीं जाने दिया। मैकश अकबराबादी का यह बयान नज़ीर की जिन्दगी और मौत को समझने में हमारी मदद करता है कि ''खास मरतबे के लोगों को आम कब्रिस्तान में दफन करना बेहतर नहीं समझा जाता, दरवेशों और वलियों की कब्र आमतौर पर वहीं बनाते हैं, जहाँ उन्होंने सारी उम्र खुदा की याद में गुजारी हो।'' नज़ीर के अड़ोस-पड़ोस के लोग, उनके शागिर्द और कद्रदां उनको अपना हितैषी और मददगार ही नहीं, एक ख़ुदारसीदा बुजुर्ग भी मानते थे, जिसकी शायरी उनके जीवन का, उनके जीवन-यापन का एक अनिवार्य हिस्सा थी। मरने के बाद मियां नज़ीर का मियाना कद और सांवली सूरत भले उनके सामने न रहे, उनकी मज़ार तो उनकी आँखों के सामने रहनी ही चाहिए। मियां नज़ीर की कब्र वहीं बनी जहाँ उन्होंने जिन्दगी काटी थी। यानी ताजगंज में। मुमताज बीबी, तुम ताजमहल के चिकने मर्मरी आगोश में आराम फरमाओ, हम तो यहीं झींगुरों के शोरगुल के बीच, अनगढ़ पत्थरों और धूलधक्कड़ के बीच लेटेंगे। बहुत सुकून हमें कभी बर्दाश्त नहीं हुआ।

मैं ताजगंज पहुँच गया। मुझे जिस शोध छात्रा की पी-एच-डी. की मौखिकी लेने जाना था, उसकी निर्देशिका वहीं ताजगंज में रहती थी। रहती क्या थी—वहाँ के होटल ताजगंज की मालकिन थीं। ताजमहल के दक्षिणी गेट के ऐन सामने। उन्होंने अपने पत्र में होटल ताजगंज तक पहुँचने के सारे संकेत, दिशा-निर्देश लिख दिए थे। मैं ताजगंज पहुँच गया, होटल ताजगंज में डेरा जमाया, विश्वविद्यालय का काम निबटाया, शाम को ताजमहल के पिछवाड़े का नज़ारा लेने अकेला ही यमुना के किनारे तक पहुँच गया। ताजमहल के पिछवाड़े की दीवारें बहुत पुख्ता और ऊँची थीं, मय कंगूरों और बुर्जियों के। बीच-बीच में गेट थे जहाँ पहरेदार तैनात थे। बड़े-बड़े लाल पत्थरों से बनी पिछवाड़े की यह बहुत ऊँची दीवार ताजमहल के सफेद संगेमर्मरों की तरह आकर्षण नहीं, आतंक पैदा कर रही थी। सौंदर्य की सृष्टि इस दीवार का लक्ष्य नहीं था, सुरक्षा की सनद को ध्यान में रखकर ही इसका निर्माण हुआ था। इस ऊँची लंबी दीवार से लगी हुई एक पतली लंबी सड़क थी जो यमुना के किनारे तक पहुँचती थी। सड़क के दूसरी ओर ताजगंज के गली-कूचे थे, दुराहे, चौराहे थे जिनमें पनवाड़ियों की, हज्जामों की, नानवालों की, इत्रफरोशों की, परचूनियों की, छोटे-मोटे बजाजों की दुकानें थीं, अफ्यूम और भांग वालों की गुमटियाँ, आमलेट बनाने वालों के ठेले ठीक वैसे ही थे जैसे किसी नई कॉलोनी के निर्माण के दिनों में नाले के उस पार दिखाई देते हैं। गली-कूचों में यमुना से जल भर कर पीठ पर मशक लादे भिश्ती थे, गोलगप्पे बेचने वाले उनमें जलजीरा भरकर ग्राहकों को खिला रहे थे, बुढ़िया के बाल वालों के पीछे बच्चे लगे हुए थे। रंगीन रिबन लहराते हुए फेरी वाले थे। 'हर माल मिलेगा दो रुपए' की सदा के साथ घंटी बजाते ठेले वाले थे, जिन्हें वहाँ के लोग ठिलिया कह रहे थे। सड़क पर घिसट-घिसट कर भीख माँगने वाले मंगन थे। कहीं कोनों में ग्राहकों के इंतजार में मिस्सी लाली से सजी टकैलें थीं, जिनकी उपस्थिति की भनक, नीम अंधेरे के बावजूद, उनके कपड़े से उठने वाली महक से मिल रही थी। जीवन की इस धमाचौकड़ी को हनुमान जी के मंदिरों में बज रही घंटियाँ धार्मिक परिवेश दे रही थीं। लाल लंगोटा धारण किए हुए, पर्वत उठाए हुए, बजरंगबली की इतनी मढ़ियाँ थीं कि लगता था पवनसुत ताजगंज के देवता हैं। हनुमान जी की इस यत्र-तत्र-सर्वत्रता का कारण जल्दी ही समझ में आ गया। हर पचास कदम पर एक अखाड़ा था, जिसमें पट्ठे जोर आजमाइश कर रहे थे और बाहें फुला-फुलाकर, अपनी मछलियाँ दिखा-दिखा कर और देख-देख कर खुश हो रहे थे। कहीं ठंडाई छन रही थी, ब्रह्मचारियों का प्रिय पेय। यमुना जी पर नावें तैर रहीं थीं, मल्लाह डोंगियाँ लिए यात्रियों को इस पार से उस पार ले जा रहे थे। सब कुछ वैसा ही था जैसा नज़ीर मियाँ ने कोई दो सौ बरस पहले देखा होगा। आगरा बाजार का जीवंत रंगमंच। चिड़ियों की आवाज से गूँजता हुआ, दूकानदारों की आवाजों से पटा हुआ। मियां नज़ीर ने जो कुछ अपनी कविताओं में लिखा है और हबीब तनवीर ने रंगमंच पर दिखाया है, सब कुछ वैसा ही जीवित और जीवंत। वहाँ धड़कता हुआ लहू रगों में दौड़ रहा था और आँखों से भी टपक रहा था।....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

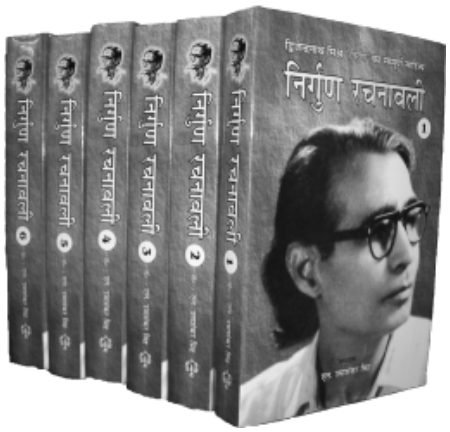

आकार : डिमाई *प्रकार* : सजिल्द व अजिल्द

कुल पृष्ठ : 3372

सजिल्द : मूल्य : रु० 3000.00

अजिल्द : मूल्य : रु० 1800.00

निर्गुण रचनावली (छः खण्डों में)

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' का सम्पूर्ण साहित्य

जब तक हिन्दी में निर्गुणजी जैसे कहानीकार कहानी लिख रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेमचंद के बाद हिन्दी में उच्चकोटि की कहानी का लिखना बन्द हो गया। इनको हम किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार के समक्ष रख सकते हैं। निर्गुण जैसे कलाकार के होते हुए अन्य भाषाओं के कहानीकारों की ओर हमें दौड़ने की क्या जरूरत है ?—**रामधारी सिंह 'दिनकर'**

(*रचनावली के खण्ड-3 की एक कहानी का अंश*)

अँधेरा

डेरे के ठीक सामने एक सज्जन गृहस्थ रहते थे। पैंतीस-छत्तीस के रहे होंगे; जवानी उतरने लगी थी। लटी देह, गेहुआँ रंग और माथे पर रेखायें।

प्रतिदिन वही काला कोट पहिन कर, कागजों की फाइलें छाती के पास हाथ से दबाये, गम्भीर चेहरे से घर के बाहर आते और नपे-तुले कदमों से चौराहे तक जाकर खड़े हो जाते और किसी कचहरी जाने वाले इक्के की प्रतीक्षा करते।

फिर शाम होते-होते उधर से लौटते, तो फाइलें उसी तरह छाती के पास दबी रहतीं, टोपी पर और मुँह पर राह की धूल छाई रहती, जूतों पर सफेद गर्द जमी दीखती और चेहरे पर थकान और उदासी अंकित रहती। गरदन नीची किये झुके-से चले आते धीमी चाल से।

एक दिन भी, एक बार भी रामप्रसाद ने उनके चेहरे पर मुस्कान न देखी, हँसी न सुनी। न कभी आँखों में मस्ती, न कभी शरीर में स्फूर्ति, न कभी उमंग। जैसे कोई संवेदन-रहित, माँस और हड्डियों से बनी मशीन हो—किसी वैज्ञानिक की बनाई।

उनके पाँच बच्चे थे। छुट्टी और त्योहार के दिन वे उन सबको एक साथ लेकर बाहर निकलते थे। पाँचों बच्चे करीब-करीब एक ही से रंग-रूप के थे और एक से ही कपड़े पहिने रहते। सबसे बड़ी लड़की और बड़ा लड़का आगे चलते, उनके पीछे दो छोटे और सबसे छोटा एक उनकी गोदी में।

तब प्रायः ऐसा होता कि पीछे दोनों में से कोई एक रुककर रोने लगता या उसका 'पजम्मा' खुल जाता या जूता निकल जाता। तब रामप्रसाद देखता—वे गृहस्थ राह में रुककर खड़े हुये हैं। पुचकार कर या नाराज होकर उस बच्चे को बुला रहे हैं या गोदी वाले को नीचे उतार कर उसका पजम्मा बाँध रहे हैं और फिर क्रमशः चारों के नाम लेकर आगे बढ़े चले जा रहे हैं—''हरीश, आगे देख कर चल; विमला मुन्ने का हाथ पकड़ ले; राजेश तू सुनता नहीं, साइकिल से पिचेगा। अरे, इधर ही रहो सब, सीधे चलो।''...

देख कर रामप्रसाद का मन जाने कैसे एक दुःख, एक विरक्ति और घृणा से भर उठता, धीरे से कहता—छिः !

❑ ❑ ❑

कोई 'पर्व' आ पड़ा था। कॉलेज बन्द था और बोर्डिंग के लड़के उस रात को 'ड्रामा' खेलनेवाले थे। रामप्रसाद का भी पार्ट था। उसे सन्ध्या को ही पहुँचना था। पर जब वह बालों में कंघी करके कमरे की साँकल चढ़ाने लगा, तो अचानक अपने पीछे किसी बालक की आवाज सुनकर चौंक पड़ा। यह विमला थी उन सामनेवाले की लड़की। नीचे नज़र गड़ाकर बोली हौले से—''हमारे बाबूजी बीमार हो गये हैं—''

रामप्रसाद हक्का-बक्का हो कर उसका करुण मुख निहारता रहा; कुछ बोल ही न सका।

फिर घड़ी भर स्तब्ध रह कर जीने से नीचे उतरने लगा। लड़की मुँह सिये पीछे थी। और इसी तरह दोनों सामनेवाले घर की चौखट तक आ गये तो कहा—''चलो, आगे चलो।''...

फिर वह डॉक्टर को लाया। फिर दवा-दारू लाया। फिर उन्हें एक मात्रा अपने हाथ से पिलाई। फिर उसी लड़की से कहा कि—''हम अभी आधे घण्टे में आते हैं—''

बीच में आँगन था; आँगन के पार एक कोठरी थी, उसी में से बाहर जाने की राह थी। रामप्रसाद उस अँधेरी कोठरी से होकर निकलने लगा, तो हठात् किसी चीज से उसका पैर छू गया। पर वह भागकर उस जगह को छोड़ नहीं पाया। बरफ की तरह शीतल और फूल-सी कोमल अँगुलियाँ पैरों पर चिपटी हैं। शब्द नहीं है, ध्वनि नहीं है, आँसू हैं। रामप्रसाद घबराकर अपने पैर खींचता बोला—''आप यह क्या कर रही हैं—''

फिर वह सारी रात रोगी की शय्या के पास जागता रहा। फिर क्रमशः इसी तरह एक दिन और रात कटी। फिर तीसरी भोर को पाँचों बालक उनके सामने खड़े किये गये; सबकी 'मिठी' ली। फिर 'उसे' पास बुलाया इशारे से। पीला, सूखा, काँपता हाथ सिर पर रक्खा, हौले से कहा—''मेरी ओर देखो—''

.....!

''घबराना मत—''

.....!

रामप्रसाद पत्थर की तरह खड़ा था।

पाँचों बच्चे 'बाबू जी, हाय बाबू जी!' कहकर पतली आवाजों में रो उठे।...

फिर मसान में एक चिता सुलगी। हाथ-दो हाथ-तीन हाथ ऊँची रंगीन लपटें उठ कर नीचे आती गईं, फिर क्रमशः लाल अंगारे रह गये, फिर उनकी 'राख' बन गई ठंडी-सी, जैसी राह की धूल होती है।

❑ ❑ ❑

रामप्रसाद ने फिर उन अभागों के लिए क्या किया—क्या न किया, इसको जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वे बातें बहुत पुरानी हो गई हैं और उनकी सत्यता अब कोई प्रमाणित नहीं कर सकता। सालें हुईं; वे लोग उस शहर को छोड़ गये। 'मौसाजी' आये थे विमला के। वे उन अनाथों को और उस नसीब की मारी विधवा को अपने साथ ले गये। और चलते समय युवक रामप्रसाद को एकान्त में बुलाकर कह गये कि—अब जहाँ ये बच्चे जा रहे हैं, वहाँ आने की हिम्मत नहीं करनी चाहिये; न अब उस 'विधवा' को कोई चिट्ठी-पत्री या पैसों की सहायता भेजनी चाहिये। क्योंकि 'मौसा' ने अपने बाल धूप में सफेद नहीं किये हैं और वे आदमी को खूब पहचानते हैं। और अन्त में आँखें सिकोड़कर कहा—'तुम्हारी माँ-बहिनें नहीं हैं? खुद नरक में गिरना चाहते हो तो गिरो; इस दुखिया के दोनों 'लोक' बिगाड़ते तुम्हें तनिक भी—

रामप्रसाद का मुख सुर्ख हो गया, देही काँपने लगी, चिल्लाकर बोला—''चुप रहो! आगे बोले तो जुबान पकड़कर खींच लूँगा—''

''चाचाजी!'' विमला दरवाजे से पुकार उठी। रामप्रसाद की दृष्टि उधर गई। देखा—किवाड़ की ओट में कागज से सफेद, चूड़ियों से खाली दो हाथ जुड़े हैं और पीले-जर्द चेहरे पर पत्थर की-सी प्रकाशहीन आँखों से पानी बह रहा है छर्-छर्। वह पत्थर की बनी पुतली रामप्रसाद के क्रोध से काँपते मुख पर स्थिर है न?....

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

लीलाधर मंडलोई सम्मानित

नई दिल्ली। इण्डिया हैबिटेट सेण्टर में गाँधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा द्वारा आचार्य काका कालेलकर की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में हिन्दी साहित्य एवं मीडिया सेवाओं के लिए लीलाधर मंडलोई को आचार्य काका कालेलकर सम्मान 2010 से सम्मानित किया गया।

हृषिकेश सुलभ को इंदु शर्मा कथा सम्मान

रंग-चिंतक व कथाकार हृषिकेश सुलभ को उनके कथा संग्रह 'वसंत के हत्यारे' के लिए वर्ष 2010 के अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान के लिए चुना गया है। वह लघु कथाओं और विदेशिया शैली के नाटकों के लिए पहचाने जाते हैं। सुलभजी को यह पुरस्कार इस वर्ष 8 जुलाई को हाउस ऑफ कॉमन्स में दिया जाएगा।

अनीता वर्मा को शीला सिद्धांतकर सम्मान

इस वर्ष का शीला सिद्धांतकर स्मृति सम्मान कवयित्री अनीता वर्मा को दिया गया है। त्रिवेणी सभागार में आयोजित एक समारोह में सुप्रसिद्ध कवि कुंवर नारायण ने उन्हें सम्मानित किया। पुरस्कार के रूप में उन्हें प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और ग्यारह हजार रुपये की धनराशि प्रदान की गई। समारोह में कुंवर नारायण ने कहा कि अनीता वर्मा की कविताएँ भीतर और बाहर को जोड़ती प्रतीत होती हैं। समारोह के विशिष्ट अतिथि मलयालम कवि के० सच्चिदानंदन थे। उन्होंने इस अवसर पर शीला सिद्धांतकर की पुस्तक 'औरत सुलगती हुई' के अंग्रेजी अनुवाद 'वुमेन स्मॉल्डरिंग' का लोकार्पण किया।

दिल्ली उर्दू अकादमी के पुरस्कार

दिल्ली उर्दू अकादमी द्वारा आयोजित समारोह में उर्दू भाषा के विकास में उल्लेखनीय योगदान देने वाले साहित्यकारों, लेखकों और शायरों को अकादमी के वर्ष 2009 के विभिन्न पुरस्कार मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने प्रदान किए। अकादमी का सबसे बड़ा पुरस्कार कुल हिंद बहादुरशाह जफर पुरस्कार उर्दू सहित कई भाषाओं के मशहूर विद्वान् प्रो० मसूद हुसैन खान को प्रदान किया गया। इसके अलावा उर्दू के जाने-माने लेखक डॉ० खलीक अंजुम, डॉ० कश्मीरी लाल जाकिर, शायर नूरजहाँ सर्वत तथा बाल साहित्य के लिए डॉ० बानो सरताज को पुरस्कार प्रदान किए गए।

पंजाबी अकादमी पुरस्कार

नई दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर के सभागार में दिल्ली पंजाबी अकादमी द्वारा वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में पंजाबी साहित्य एवं संस्कृति में उल्लेखनीय योगदान के लिए सतीश गुजराल, डॉ० रतन सिंह जग्गी, अमरजीत सिंह अमर, डॉ० मनमोहन तथा रंजीत कौर को अकादमी की अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने सम्मानित किया।

पत्रकारों को सम्मान

नई दिल्ली के इण्डिया हैबिटेट सेंटर में ग्लोबल पंजाबी सोसाइटी की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अम्बिका सोनी द्वारा खुशवंत सिंह, एच०के० दुआ, के० नरेन्द्र, विक्रम चंद्रा, सोनल कालरा, तरुण तेजपाल, सुनील टंडन एवं चेतन भगत के अलावा विजय चोपड़ा, प्रभु चावला, पंकज वोहरा, एसएस विर्क एवं रंजीत सिंह आदि 14 पत्रकारों को जीपीएस मीडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मध्य प्रदेश के राज्यपाल बलराम जाखड़, सीबीआई के पूर्व निदेशक जोगिंदर सिंह आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

आनंदप्रकाश दीक्षित और रमेश दवे को शताब्दी सम्मान

मध्य भारत हिन्दी साहित्य द्वारा अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण करने पर डॉ० आनंदप्रकाश दीक्षित, पुणे को अखिल भारतीय पुरस्कार तथा रमेश दवे, भोपाल को प्रादेशिक पुरस्कार के लिए चुना गया है। डॉ० आनंदप्रकाश दीक्षित भारतीय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद के पूर्व अध्यक्ष तथा पुणे विश्वविद्यालय में हिन्दी के पूर्व प्राध्यापक, साहित्यकार और संस्कृतिधर्मी हैं। प्रादेशिक पुरस्कार के लिए चयनित रमेश दवे, चिंतक, वरिष्ठ लेखक, कवि, समीक्षक और आलोचक हैं।

हेमंत शेष को 19वाँ बिहारी सम्मान

के०के० बिड़ला फाउंडेशन के वर्ष 2009 के बिहारी पुरस्कार के लिए हेमंत शेष के काव्य-संग्रह 'जगह जैसी जगह' का चयन किया गया। यह सम्मान फाउंडेशन द्वारा राजस्थान के महाकवि बिहारी के नाम पर राजस्थान के कवि को दिया जाता है।

धर्मवीर भारती राष्ट्रीय शिखर सम्मान

भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर, बिहार द्वारा 'बच्चन :पत्रों के दर्पण में' के लेखक डॉ० राम निरंजन परिमलेन्दु को वर्ष 2010 के लिये 'धर्मवीर भारती शिखर सम्मान' प्रदान किया गया।

पं० गिरिमोहन गुरु 'शब्द श्री' से अलंकृत

विगत दिवस शब्द-प्रवाह उज्जैन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय साहित्य सम्मान 2010 के अन्तर्गत शिव संकल्प साहित्य परिषद के संस्थापक नव गीतकार पं० गिरिमोहन गुरु को नवगीत सृजन सेवा के लिए 'शब्द श्री' मानद उपाधि प्रदान की गई।

भोपाल के डॉ० रामवल्लभ आचार्य को 'नटवर गीत सम्मान 2010' घोषित

शोधपरक सत्-साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य सागर' द्वारा गीत विधा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रवर्तित 'नटवर गीत सम्मान' (रुपये 11000) हेतु इस वर्ष भोपाल के वरिष्ठ गीतकार डॉ० रामवल्लभ आचार्य को प्रतियोगिता के माध्यम से चुना गया है, इसकी घोषणा करते हुए पत्रिका के सम्पादक श्री कमलकान्त सक्सेना ने बताया कि पत्रिका के द्वारा आगामी 20 अगस्त को भोपाल में राष्ट्रीय स्तर के 'गीत-उत्सव' का आयोजन किया जाएगा और उसके अन्तर्गत उक्त सम्मान प्रदान किया जाएगा।

रूस में डॉक्टर मधु सम्मानित

मास्को। रूस में रहने वाले भारतीय समुदाय के लोगों ने प्रख्यात कवि और अनुवादक डॉक्टर मदनलाल मधु को सम्मानित किया। यहाँ स्थित भारतीय उच्चायोग में डॉ० मधु के 85वें जन्मदिन के अवसर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। रूस में हिन्दुस्तानी समाज के संस्थापक सदस्यों में से एक डॉ० मधु एक सरकारी कार्यक्रम के तहत 1957 में सोवियत संघ आए थे। इस कार्यक्रम के तहत उन्हें रूस के महान साहित्यकार अलेक्जेंडर पुश्किन, एंटन चेखोव और लियो टालस्टाय की कृतियों का हिन्दी में अनुवाद करना था। भारत में आजादी के बाद जन्मी युवा पीढ़ी को रूसी बाल साहित्य से परिचित कराने का श्रेय डॉ० मधु को ही जाता है। डॉ० मधु करीब 30 साल तक हिन्दुस्तानी समाज के अध्यक्ष रह चुके हैं। भारतीय उच्चायोग में कार्यक्रम के दौरान मधु के भारत-रूस के बीच सम्बन्धों को मजबूत करने और साहित्य के क्षेत्र में किए गए उनके कार्यों की प्रशंसा की गई। उन्हें रूसी सरकार से आर्डर ऑफ फ्रेंडशिप और भारत सरकार द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

महाश्वेता व डॉ० बनर्जी को राममोहन पुरस्कार

कोलकाता में महान समाज सुधारक राजा राममोहन राय की 238वीं जयन्ती पर राममोहन मिशन ने विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए दो हस्तियों को सम्मानित किया। विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए परमाणु ऊर्जा आयोग के चेयरमैन श्रीकुमार बनर्जी व विशिष्ट साहित्यकार महाश्वेता देवी को क्रमशः राजा राममोहन पुरस्कार व राममोहन मिशन अवार्ड से सम्मानित किया गया। डॉ० बनर्जी को पुरस्कार स्वरूप 5 लाख की नकद राशि, स्वर्ण पदक तथा प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया, जबकि महाश्वेता देवी को 51 हजार की राशि व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

'भारतीयों की आत्मा है संस्कृत'

बैंकाक में 'श्रीराम कीर्ति महाकाव्य' की रचना कर विश्व में अपना स्थान बनाने वाले और पद्मभूषण व राष्ट्रपति पुरस्कार सहित 68 पुरस्कार प्राप्त प्रो० सत्यव्रत शास्त्री ने संस्कृत को भारतीयों की आत्मा की संज्ञा दी। उनका कहना है कि संस्कृत भाषा का सभी क्षेत्रों में विकास हो रहा है। ऐसे में यह कहना कि संस्कृत से लोग दूर हो रहे हैं, गलत है।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० राजेन्द्र मिश्र संस्कृत को आयुर्वेद की भाषा मानते हैं। वाल्मीकि पुरस्कार पाकर खुद को धन्य मानने वाले प्रो० मिश्र संस्कृत भाषा को 5000 वर्ष पुरानी भाषा बताते हैं। उनका कहना है कि संस्कृत की ओर विदेशियों का रुझान बढ़ा है और आने वाले समय में यह भाषा विश्वस्तर की भाषा बनकर उभरेगी। जो देश के लिए किसी गौरव से कम नहीं है। प्रो० ब्रजविहारी चौबे संस्कृत भाषा को ब्रह्माण्ड की अनुभूति कराने वाली भाषा मानते हैं। उनका कहना कि सुबह ईश्वर की प्रार्थना भी संस्कृत में ही होती है जो लोगों को सुख समृद्धि की ओर ले जाती है। वाराणसी के प्रो० गंगाधर पण्डा का कहना है कि वेदों की भाषा कही जाने वाली संस्कृत देशवासियों को सिर उठाकर जीना सिखाती है। इस भाषा में वैदिक ग्रन्थों के साथ ही अर्थ व्यवस्था व संस्कृति को आगे ले जाने के तरीकों का समावेश है।

श्रीमती उर्मि कृष्ण को 'साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान'

हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला द्वारा 'लाला देशबन्धु गुप्त सम्मान' (साहित्यिक पत्रकारिता) हेतु वर्ष 2008-09 के लिए श्रीमती उर्मि कृष्ण को चुना गया। सम्मान स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये की राशि प्रदान की जाएगी। श्रीमती उर्मि कृष्ण पिछले 38 वर्षों से साहित्यिक पत्रिका 'शुभ तारिका' का प्रकाशन कर रही हैं।

श्री नैमिशराय को 'आंबेडकर स्मृति सम्मान'

14 अप्रैल को बाबा साहेब आंबेडकर की जयन्ती पर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू (म०प्र०) में आयोजित एक कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने समाजसेवी व चिन्तक श्री मोहनदास नैमिशराय को वर्ष 2007-08 का डॉ० आंबेडकर स्मृति सम्मान प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ शॉल-श्रीफल और प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा नेता श्री वैंकेया नायडू उपस्थित थे।

डॉ० कथूरिया 'विद्या भास्कर' से सम्मानित

18 अप्रैल को माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट की ओर से आर्य समाज, सरस्वती विहार, नई दिल्ली में आयोजित एक सम्मान समारोह में सुविख्यात लेखक एवं कवि डॉ० सुन्दरलाल कथूरिया को वेद-विद्या एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा मानव कल्याण के क्षेत्र में योगदान के लिए 'विद्या भास्कर' सम्मान से विभूषित किया गया। एमडीएच के चेयरमैन महाशय धर्मपाल ने उन्हें शॉल, स्मृति चिह्न व सम्मान राशि प्रदान की। इसके अलावा श्रीमती सुदेश आर्या को 'संगीत रत्न सम्मान', श्री निहाल चंद सपरा एवं श्री नंद किशोर गुप्ता को 'निष्काम सेवी सम्मान' तथा सर्वश्री बीना सभरवाल, सन्तोष मनचंदा, वर्षा आहूजा और विजेन्द्र आर्य को 'यज्ञश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया।

श्री अशोक अंजुम को स्व० प्रभात शंकर स्मृति सम्मान

7 मई को चर्चित व्यंग्यकार-गजलकार श्री अशोक अंजुम को लखनऊ के जयशंकर प्रसाद सभागार में संस्था 'माध्यम' तथा नमन प्रकाशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 2010 का 'स्व० प्रभात शंकर स्मृति सम्मान' प्रदान किया गया। उ०प्र० भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री गोपाल चतुर्वेदी ने उन्हें सम्मानस्वरूप अंगवस्त्रम, स्मृति चिह्न, श्रीफल, सम्मान-पत्र तथा 5,100/- रुपये की राशि प्रदान की।

मदन कश्यप और शरद दत्त को 'शमशेर सम्मान'

12 मई को शमशेर बहादुर की जन्मशताब्दी पर त्रिवेणी कला संगम में अनवरत संस्थान की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि श्री मदन कश्यप को उनकी कविताओं के लिए तथा सृजनात्मक गद्य लेखन के लिए प्रतिष्ठित रचनाकार श्री शरद दत्त को 'शमशेर सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात आलोचक श्री नामवर सिंह ने अध्यक्षीय भाषण दिया। श्री विष्णु नागर ने शमशेर की कविताओं का जिक्र कर उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संयोजन डॉ० प्रताप राव कदम ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री अशोक वाजपेयी, लीलाधर मंडलोई, राजेन्द्र यादव, विश्वनाथ त्रिपाठी सहित कई जाने-माने साहित्यकार उपस्थित थे।

साहित्य अकादमी का 'सम्मान अर्पण' समारोह सम्पन्न

11 मई को हिन्दी अकादमी, दिल्ली की ओर से 'सम्मान अर्पण' समारोह का आयोजन दिल्ली सचिवालय में किया गया। मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने साहित्यकारों को अपनी सोच और चिंतन के जरिए समाज को रास्ता दिखाने वाला बताया। उन्होंने वर्ष 2008-09 की पुरस्कार राशि भी 20,000 रुपए से बढ़ाकर 50,000 रुपए करने तथा अगले वर्ष से पुरस्कारों को राष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने की घोषणा भी की। सबसे पहले वर्ष 2008-09 का 'साहित्यकार सम्मान' सर्वश्री द्रोणवीर कोहली, इंद्रनाथ चौधरी, सुरेश सलिल, अब्दुल बिस्मिल्लाह, गगन गिल को दिया गया। इस वर्ष का 'काका हाथरसी सम्मान' कार्टूनिस्ट श्री इरफान को दिया गया। डॉ० रामेश्वर प्रेम का पुरस्कार उनके बेटे ने ग्रहण किया। वर्ष 2009-10 के लिए हिन्दी अकादमी 'विशिष्ट योगदान सम्मान' प्रो० मुजीब रिजवी, 'काव्य सम्मान' डॉ० कन्हैयालाल नंदन, 'गद्य विधा सम्मान' प्रो० सुधीश पचौरी, 'नाटक सम्मान' डॉ० असगर वजाहत, 'हास्य व्यंग्य सम्मान' डॉ० ज्ञान चतुर्वेदी तथा 'ज्ञान प्रौद्योगिकी सम्मान' श्री बालेंदु दाधीच को दिया गया। वर्ष 2007-08 का 'साहित्यिक कृति पुरस्कार' श्री कृपाशंकर सिंह को उनकी पुस्तक 'ऋग्वेद, हड़प्पा सभ्यता और सांस्कृतिक निरंतरता', श्री सूरजपाल सिंह चौहान को उनके कविता संग्रह 'कब होगी वह भोर', सुश्री मधु शर्मा के कविता-संग्रह 'पसीने की बूँद', श्री आदित्य अवस्थी को 'दिल्ली की क्रान्ति के 150 वर्ष', प्रो० पवन माथुर की पुस्तक 'शब्द बीज' और श्री पी०के० आर्य की पुस्तक 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' के लिए सम्मानित किया गया। वर्ष 2007-08 का 'बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान' सर्वश्री कुसुमलता सिंह, सरस्वती बाली, राधाकांत भारती, मधुलिका अग्रवाल, अखिल चन्द्र और पूरण चन्द्र कांडपाल को दिया गया। इस अवसर पर हिन्दी अकादमी की पत्रिका 'इंद्रप्रस्थ भारती' का विमोचन भी किया गया।

डॉ० सलिल को अमृत महोत्सव सम्मान

जमशेदपुर में दक्षिण भारत की प्रतिनिधि संस्था 'मद्रासी सम्मेलनी' ने अपने भव्य सभागार में 'अमृत महोत्सव' का आयोजन किया। कांची कामकोटि के शंकराचार्य श्री श्री जयेन्द्र सरस्वती मुख्य अतिथि थे।

इस अवसर पर हिन्दी और भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० बच्चन पाठक 'सलिल' को साहित्य के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान के लिए शंकराचार्य ने सम्मानित किया।

जस्टिस शारदाचरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान 2010 प्रो० विजयराघव रेड्डी को

'अपनी भाषा' संस्था अनुवाद कार्य द्वारा भारतीय भाषाओं के बीच सेतु निर्माण के लिए वर्ष 2001 से जस्टिस शारदा चरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान प्रदान कर रही है। वर्ष 2010 के लिए यह सम्मान हिन्दी तथा तेलुगु के बीच अपने रचनात्मक अवदान तथा अनुवाद कार्य के माध्यम से भावात्मक एकता एवं सौमनस्य कायम करने के लिए श्री पोली विजयराघव रेड्डी को दिया गया। अस्वस्थता के कारण श्री रेड्डी की

शेष पृष्ठ 9 पर

अत्र-तत्र-सर्वत्र

दिल्ली हाईकोर्ट में हिन्दी में जिरह

दिल्ली हाईकोर्ट में देश के अन्य हिन्दीभाषी राज्यों के हाईकोर्ट की तर्ज पर हिन्दी में बहस की अनुमति देकर न्यायाधीश रेखा शर्मा ने एक साहसिक पहल की है। हाईकोर्ट के वकील दास गुनिंदर सिंह के लिखित अनुरोध पर न्यायाधीश ने उन्हें हिन्दी में बहस करने की अनुमति दे दी। हाल ही में सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश ए०पी० शाह ने गत जनवरी में हिन्दी में जिरह करने की माँग को ठुकरा दिया था।

विश्व हिन्दी संग्रहालय एवं अभिलेखन केन्द्र में संग्रह कार्य एवं दस्तावेजीकरण

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की हिन्दी अध्ययनशाला में साहित्यकार चित्रदीर्घा, रचनाकारों के हस्तलेख, शोधपत्रिकाओं और अनुसंधान सूचनाओं को व्यवस्थित किया गया है। सम्प्रति मालवी संस्कृति के समेकित रूपांकन और अभिलेखन की दिशा में प्रयास जारी है।

जापान के पुस्तक-व्यवसाय पर 'आईपॉड' ग्रहण

जापान के पुस्तक-व्यवसाय वर्ग मे 'आईपॉड' के बढ़ते प्रभाव को लेकर निराशा व्याप्त है। कारण यह है कि यहाँ के लगभग 21 अरब डॉलर के पुस्तक-व्यवसाय का पारम्परिक-स्वरूप इलेक्ट्रानिक-तकनीक के लगातार विकसित होते माध्यमों से खण्डित होता जा रहा है जो चिंता का विषय है। और चूँकि इस विकास के साथ-साथ पारम्परिक-तरीकों में अभी बदलाव भी नहीं हुआ है इसी के मद्देनजर पिछले दिनों जापान के संचार मंत्री का जुहिदो-हारामुची और ई-बुक प्रकाशकों के साथ पुस्तक-व्यवसायियों की एक बैठक भी आयोजित हुई, जिसमें चिंताओं का समाधान खोजने की कोशिश की गयी, किन्तु 'आईपॉड' का आतंक अभी भी कायम है।

आस्ट्रेलिया में भी 'आईपॉड' प्रभाव

पुस्तक-व्यवसाय में प्रसारित इलेक्ट्रानिक-हस्तक्षेप को संतुलित करने के लिये वहाँ की सरकार ने 'बुक-इंडस्ट्री-स्ट्रेटेजी-ग्रुप' का गठन किया है जिसमें इस व्यवसाय से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के (लेखक, मीडिया, कलाकार, मनोरंजन, प्रकाशन-समूह, मज़दूर संघ आदि से) चयनित 14 प्रतिनिधि शामिल किये गये हैं।

भारतीय मूल की गीता बनीं हार्वर्ड में प्रोफेसर

भारतीय मूल की गीता गोपीनाथ को हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र विभाग में पूर्णकालिक प्रोफेसर नियुक्त किया गया है। वह इस पद पर नियुक्त होने वाली पहली भारतीय महिला हैं। हार्वर्ड में अर्थशास्त्र के पूर्णकालिक प्रोफेसर के रूप में गीता का कार्यकाल एक जुलाई से शुरू होगा। यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष ड्रियूजी फॉस्ट ने पिछले महीने इसकी पुष्टि की थी। वह विभाग में पूर्ण प्रोफेसर बनने वाली तीसरी महिला हैं।

छत्तीसगढ़ विश्वविद्यालय समावर्तन उत्सव में गाउन पहनना मना

छत्तीसगढ के बिलासपुर के गुरु घासी दास विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त (समावर्तन) उत्सव में एक पुरानी मानसिक दासता से मुक्ति का उद्घोष किया गया। विश्वविद्यालय के प्रथम समावर्तन उत्सव में ब्रिटिश उपनिवेशवादी प्रशासन के समय की प्रचलित प्रथा गाउन न पहनने का आदेश दिया गया। इस उत्सव में छात्र एवं अध्यापकों को राज्य की पारम्परिक पोशाक—कुर्ता और पायजामा तथा छात्रा एवं अध्यापिकाओं को साड़ी परिधान के लिए आदेश हुआ है। अभी अभी केन्द्र मन्त्री जयराम रमेश ने एक समावर्तन उत्सव में भाग लेकर इस परिचित वेश-पोशाक को ब्रिटिश उपनिवेशवाद की एक दास प्रथा का नमूना बताया था। और वे चर्चा के घेरे में रहे।

आज भारत का कारपोरेट जगत एक ऐसे सम्प्रेषण माध्यम तथा व्यावसायिक भाषा की तलाश कर रहा है जो बहुभाषिक समाज को स्वीकृत हो। इस कार्य के लिए हिन्दी से अधिक सफल कोई दूसरी भाषा नहीं हो सकती। **—राजभाषा स्तम्भ**

ग्रन्थ ऐसे शिक्षक हैं जो बिना बेंत मारे, बिना कटु शब्द और क्रोध के, बिना वस्त्र और धन के हमें शिक्षा देते हैं। **—रिचार्ड डी वरी**

पृष्ठ 8 का शेष

अनुपस्थिति में प्रो० सी० बर्द्धन कुमार ने सम्मान ग्रहण किया। श्री कुमार ने विजयराघव रेड्डी के 'तेलुगु-हिन्दी अन्तर्सम्बन्ध : ऐतिहासिक सन्दर्भ एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य' विषय पर लिखित व्याख्यान का पाठ किया।

द्वितीय सत्र में 'भारत की सामासिक संस्कृति और हिन्दी' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता पूर्व सांसद श्रीमती सरला माहेश्वरी ने की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वरिष्ठ आलोचक डॉ० श्रीभगवान सिंह ने कहा कि भले ही हम राजनीतिक सन्दर्भ में स्वतन्त्र हों, भाषिक रूप से हम अब भी पराधीन हैं। हिन्दी साम्राज्यवादी भाषा नहीं है। बोलियों का आन्दोलन हमारे एकत्व को खण्डित करने का उपक्रम है। इससे किसी का भला नहीं होगा।

स्मृति-शेष

रेखा जैन का निधन

प्रसिद्ध साहित्यकार नेमिचंद्र जैन की पत्नी रेखा जी जो बाल रंगमंच की जानी-मानी हस्ती थीं, का 21 अप्रैल को निधन हो गया। वह इप्टा के साथ-साथ उमंग नामक संस्था से भी जुड़ी थीं। उमंग की स्थापना तो उन्होंने खुद ही की थी। दिवंगत साहित्याकर नेमिचंद्र जैन की पत्नी रेखा जैन को संगीत नाटक अकादमी के पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

प्रो० मोहम्मद हसन का निधन

प्रोफेसर मोहम्मद हसन का 24 अप्रैल को बीमारी के चलते अस्पताल में निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। प्रो० हसन उर्दू आलोचना के शीर्ष पुरुष थे। वह जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र के अध्यक्ष तथा बाद में एमिरेट्स प्रोफेसर रहे। उन्होंने आलोचना की लगभग 75 पुस्तकें लिखीं, जिनमें कुछ अंग्रेजी में लिखी पुस्तकें भी शामिल हैं।

आचार्य आर० जनार्द्दनन पिल्लै का निधन

केरल के पुरोधा हिन्दी सेवी एवं आचार्य आर० जनार्द्दनन पिल्लै का पिछले दिनों निधन हो गया। वे स्वाधीनता संग्राम के सेनानी एवं प्रसिद्ध आचार्य थे। राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में तन-मन से लगे हुए श्री पिल्लै एन०एस०एस० के कालेजों में हिन्दी विभागाध्याक्ष के रूप में रहे थे और उसी पद पर से सेवा-निवृत्त हुए थे। कतिपय हिन्दी ग्रन्थों के निर्माता प्रोफेसर जनार्द्दनन पिल्लै को राष्ट्रपति श्री कलाम के हाथों से गंगाशरण पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

प्रकृति-प्रेमी सी० शरत्चन्द्रन दिवंगत हो गये!!

प्रशस्त सिनेमा-डोक्यूमेन्टरी संविधायक श्री शरत्चन्द्रन प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर और उनकी पत्नी शारदा के इकलौते पुत्र थे। समाजोद्धारण शरत्चन्द्रन का एकमात्र व्रत था। पूरे हिन्दुस्तान में जाने-माने डोक्यूमेन्टरी संविधायक के रूप में अतीव प्रशस्त थे। वे सच्चे प्रकृतिप्रेमी एवं सूक्ष्म दृक् चितेरे थे। वे अकेले चलकर एक बार गोमुखी देखकर आये थे। गिरिवर्ग जन की पीड़ा एवं दु:ख उनसे सहा नहीं जाता था। सिनेमा एवं डोक्यूमेंटरी का सदुपयोग वे इसके प्रयोग के लिए मानते थे।

आखिरी दिनों में केरल के बाहर भी जाकर इस काम में लगे हुए थे। अन्त में गाड़ी से गिरनेवाले एक सहयात्री को बचाने के लिए हाथ बढ़ाया और दोनों एक साथ नीचे गिरकर मर गए। सी० शरत्चन्द्रन की महान आत्मा परमात्मा के पास तक पहुँचे यही हमारी विनम्र प्रार्थना है।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का मई 2010 का अंक समय से हस्तगत हुआ, एतदर्थ हार्दिक आभार एवं अनेकानेक धन्यवाद। 'ग्रहण-ग्रस्त है हमारी मेधा' जिससे मानव समाज सम्प्रति त्रस्त है, व्यथित है, व्याकुल है और उससे उबरने के लिए आकुल और आतुर है जिसको सम्पादकीय में इंगित किया गया है। आर्य बनाम हिन्दू, अक्षर में कॅरियर, सिमट रहा भाषाओं और बोलियों का संसार, तकनीक ने बढ़ाई सम्भावनाएँ आदि विचारोत्तेजक निबन्ध पाठकीय स्पंदन के उपादान सिद्ध हुए हैं। नव्य प्रकाशित कृतियों का परिचयात्मक विवरण, साहित्यकारों की पूर्व पीठिका एवं मनोवृत्ति, सम्मान-पुरस्कार, पाठकों के पत्र आदि के साथ आगामी प्रकाशन की पूर्व सूचना निश्चय ही पाठकों को पठन-पाठन एवं साहित्यानुशीलन के लिए प्रेरित करेगा, प्रोत्साहित करेगा एवं हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान करेगा। आशा एवं विश्वास है आगामी अंक सम्पादकीय के अन्तर्गत समसामयिक बोध के धरातल पर ज्वलन्त समस्या का विवेचन-विश्लेषण अद्‌भुत तरीके से करेगा। पत्रिका गंतव्य की ओर सतत क्रियाशील है। जिसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

आपका 'भारतीय वाङ्मय' मुझे भेजा जाता है। इसके लिए आभारी हूँ। हिन्दी में सूचनाओं, समस्याओं, (आपके) प्रकाशनों की दृष्टि से यह पत्रिका विलक्षण है। आप चाहें तो अपनी पत्रिका की भी पृष्ठ संख्या बढ़ाकर ज्यादा प्रासंगिक बनाएँ।

आपका मुखपृष्ठ वाला सम्पादकीय स्पष्ट और बेबाक तो होता है लेकिन उसमें समाजविज्ञानों के विश्लेषण की थोड़ी पैनी धार भी जोड़ें। आपका प्रकाशन भी धर्म तथा संस्कृति की ओर ज्यादा उन्मुख है। इसे समाज और चिन्तन की धारा से भी जोड़ें। **—रमेश कुंतल मेघ,** पंचकूला, हरियाणा

'भारतीय वाङ्मय' का मई-10 का अंक पढ़ा। इसकी सम्पादकीय टिप्पणी मुझे बहुत पसन्द आई, विशेषत: 'ग्रहण-ग्रस्त है हमारी मेधा' और 'हाय-तौबा'। हम ऐसा ही सोच कर मौन रह गए, आपका साहस और सामर्थ्य कि सोचा भी, छापा भी। आपको बधाई, धन्यवाद और इससे बढ़कर आशीर्वाद कि आपकी बुद्धि ऐसी ही तीक्ष्ण एवं चिन्तन और धारदार बना रहे। स्व० आदरणीय मोदीजी की साहित्य में पैठ परख और पकड़ अद्‌भुत थी। उनके अवसान के बाद मुझे लगा था, आपके परिवार में वह प्रवाह शायद न रहे। इधर 'वाङ्मय' के अनेक अंकों में आप जैसे उभर कर आये हैं, मुझे अब कोई निराशा नहीं। आप पसंद के विषय पर स्वतन्त्र रूप से भी कुछ लिखिए। ऐसी अपेक्षा करता हूँ। हमारे जैसे लोग तो लेखन से कुछ इसलिए भी उदासीन हो जाते हैं कि लिखें तो छपे कहाँ और कैसे? आप तो उस चिन्ता से मुक्त हैं।

—त्रिभुवन ओझा, जमशेदपुर

अप्रैल, 10 का 'भारतीय वाङ्मय' प्राप्त हुआ। धन्यवाद। शब्द, पुस्तक प्रेरणा लघु कविताएँ अवश्य हैं, परन्तु गहरे चिंतन की आवश्यकता दर्शाती हैं। अन्धी आँधी के बीच आधुनिक युग की शिक्षा की दशा और सांसारिक ऊहापोह के बीच आदमी की मानसिकता की वास्तविक ऊर्जा सामने रखकर प्रगति हेतु ध्यान देने पर गम्भीरता से विचार करने को कहती है। महात्मा गाँधी के विचार हिन्दी भाषा के प्रति सोचने समझने को बाध्य करते हैं।

पुस्तक समीक्षा 'घोड़े पर हौदा, हाथी पर जीन', 'स्त्रीत्व : धारणाएँ और यथार्थ, वारेन हेस्टिंग्ज और यूरोप के कैथोलिक और प्रोटस्टेन्टों के बीच कलह और अत्याचार का पर्दाफाश कर सोचने, विचारने को बाध्य करती है।

कथाकार मार्कण्डेय पर व्यक्त किए गए विचार उनके आदर्शों को ध्यान से देखकर जहाँ उनकी साहित्यिक यात्रा की स्थिति सामने रखते हैं वहीं उनके आदर्शों से प्रेरित होने के लिए विचार करने को कहते हैं।

अंक में दिये गए सम्मान पुरस्कार और समाचार ज्ञानवर्द्धक होकर जानकारी हेतु अच्छे हैं। इस प्रकार अंक कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर नज़र डालता है और गम्भीरता से विचार करने के लिए बाध्य करता है। अच्छे अंक हेतु बधाई स्वीकार कीजिए। **—मदन मोहन वर्मा,** ग्वालियर

'भारतीय वाङ्मय' अप्रैल 2010 का अंक प्राप्त हुआ। कई साहित्यिक सूचना व महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की जानकारी से परिपूर्ण यह अंक सम्पादकीय से ही मन को छू गया जहाँ लिखा था—'आज हमारा ही शिशु हमारे लिए 'आत्मज' न होकर हमारे शरीर का 'बाई प्रॉडक्ट' बन गया है। यांत्रिक-जीवन की विषाक्त मानसिकता से निर्मित हाड़-मांस का यह पुतला कोई नई सर्जना तो नहीं कर सकता, किन्तु कितना विध्वंस करेगा, नहीं कहा जा सकता।' तुलसी कृत रामायण का इंग्लिश वर्जन आ गया, जानकर प्रसन्नता हुई। साहित्यकार मार्कण्डेय जी का अचानक जाना कष्टप्रद है।

आस्ट्रेलिया में भी जन्म ले रही हैं, हिन्दी कविताएँ—क्या कहने? डॉ० शम्भूनाथ के विचार 'भारतीय अस्मिता' के सन्दर्भ में पढ़कर अच्छा लगा, ये सच है कि हम एक बड़े कैनवास पर बौने होते जा रहे हैं। डॉ० सुशीला मिश्रजी को बधाई जिन्होंने बाबा कीनाराम पर ग्रन्थ उपलब्ध करवाया है। काशी के गौरव हैं बाबा। 'नार्वे में लहराता हिन्दी का परचम' पढ़कर अच्छा लगा।

विश्वास है पत्रिका अपना साहित्यिक योगदान अनवरत प्रस्तुत करती रहेगी। मंगलकामनाओं सहित। **—शुभदा पाण्डेय,** सिलचर, असम

आपकी पत्रिका को पूरे देश में बड़े सम्मान से पढ़ा जाता है। लेकिन सुशील सिद्धार्थ के विषय में जो कुछ आपने छापा है सरासर गलत है। निवेदन है कि कृपया इसका खण्डन भी अगले अंक में प्रकाशित करें।

अवधी के साहित्यकारों जागो

अवधी के यशस्वी साहित्यकारों जागो और देखो कि कौन तुम्हारी रचनाशीलता को खा रहा है। हमारी अवधी के नये साहित्यकारों में कुछ ऐसे त्यागी और बलिदानी सेवक हैं जो झूठी आत्मप्रतिष्ठा के लिए सारे अवधी समाज को कलंकित करने में लगे हैं। इन दिनों डॉ० सुशील सिद्धार्थ नामक कथित साहित्यकार को 14 मार्च को लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित अवध भारती के अवधी सम्मेलन में 11,0000/- रुपये के सम्मान की चर्चा आपने अनेक पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ी होगी। जो धनराशि तत्काल स्वनामधन्य सुशील सिद्धार्थ ने अवधी के विकास हेतु संस्था को लौटा दी। यह खबर असत्य है इसका मैं प्रत्यक्षदर्शी हूँ। मैं उस समारोह में दिल्ली से आमंत्रित किया गया था। पूरे समारोह में शामिल भी रहा। उस समारोह में लगभग 50 अवधी सेवकों को प्रशस्ति-पत्र और स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया था।

—भारतेन्दु मिश्र

'भारतीय वाङ्मय' के कलेवर को आपने अच्छी तरह सहेजा है। यह आपके स्व० पिताजी के संस्कार जैसा लगता है। एक चावल से भात की स्थिति देखी और परखी जाती है। आपने पंतजी के जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत कर 'भारतीय वाङ्मय' के पाठकों को यह एहसास करा दिया है कि आपमें हिन्दी के प्रति श्रद्धा के नमित भावों के भण्डार सुरक्षित हैं। आपने अपने पिता के कार्यों को गतिवान बनाया है। पुस्तक पर्व पर आधारित आपका सम्पादकीय प्रभावोत्पादक है। इस लघुकाय पत्रिका में विविध विषयों की प्रस्तुति मन को आकर्षित करती है। ऐसे सुन्दर सम्पादन के लिए आपको बहुत-बहुत साधुवाद। 'भारतीय वाङ्मय' का कलेवर नित-नूतन और रुचिकर हो, यही मेरी मंगलकामनाएँ हैं।

—डॉ० आत्मविश्वास, भागलपुर

पुस्तकों का जादू आज भी मानवता को मुग्ध कर लेता है। पुस्तकों ने ही प्रत्येक युग में मनुष्य के सपनों और विचारों उसकी आशाओं-अपेक्षाओं को बुनने में सहयोग दिया है। पुस्तकों की बन्द ज़िल्दों में सुरक्षित प्राचीन ज्ञान का अवगाहन करके ही मनुष्य, भविष्य के भवन का निर्माण करता है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

दलित साहित्य अकादमी का साहित्यकार सम्मेलन

भारतीय दलित साहित्य अकादमी (उ०प्र०) का चौदहवाँ साहित्यकार सम्मेलन डॉ० एस०पी० सुमनाक्षर की गरिमामयी अध्यक्षता और श्री माता प्रसादजी के मुख्य अतिथित्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ० मधुर नज्मी, सत्यवीर प्रकाश, नजमा सिद्दकी 'सबा', शाकी चिरैयाकोटी आदि को सम्मानित किया गया। सम्मेलन की संयोजिका थीं डॉ० लालती देवी और संचालन वैभव शर्मा ने किया।

भावी आलोचना को रचना के पास लौटना होगा : डॉ० नामवर सिंह

'भविष्य की आलोचना को रचना के पास लौटना होगा।' यह बात प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने राजकमल प्रकाशन के 61वें स्थापना दिवस के अवसर पर त्रिवेणी सभागार, मंडी हाउस में आयोजित समारोह में कही। वे 'आनेवाले समय में आलोचना का स्वरूप' विषय पर अपना व्याख्यान दे रहे थे। डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि भविष्य की आलोचना इस बात पर निर्भर करेगी कि अतीत में आलोचना क्या थी और वर्तमान में इसका स्वरूप क्या है। उन्होंने इस बात पर क्षोभ व्यक्त किया कि आज आलोचना कोई नहीं लिख रहा है। सब विमर्श कर रहे हैं। आलोचना के अतीत में झाँकते हुए उन्होंने कहा कि पहले इसके लिए समालोचना शब्द का उपयोग हुआ करता था। इस शब्द से 'सम' के हट जाने से आज क्या हो रहा है उसे सभी देख रहे हैं। पहले लिखनेवाले लोग, पुस्तक पर चर्चा भी करते थे और जमकर लिखते भी थे। रूस के रूपवादी लेखकों, पश्चिम के अन्य कई सिद्धान्तकारों और टेरी ईगलटन की पुस्तक 'हाउ टू रीड ए पोएम' का हवाला देते हुए डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि पूरी दुनिया में आलोचना 'थियरी' और 'आइडियोलॉजी' के बाद अब रचना की तरफ लौट रही है। भविष्य की हिन्दी आलोचना में भी वही होगा।

पत्रकारिता पर पुस्तकें

नई दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित मालवीय स्मृति भवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रकारिता विषयक दस पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

'दिवंगत घर के बहाने'

नागपुर में महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा द्वारा अपने सभागार में आयोजित समारोह में स्वर्गीय दुर्गा प्रसाद शुक्ल के 'दिवंगत घर के बहाने' शीर्षक आत्मकथात्मक उपन्यास का लोकार्पण गिरीश गांधी द्वारा किया गया। नागपुर में जन्मे व पले-बढ़े दुर्गाप्रसाद शुक्ल दिल्ली स्थित हिन्दुस्तान टाइम्स की मासिक पत्रिका 'नंदन' तथा 'कादम्बिनी' के सहायक सम्पादक रहे। उल्लेखनीय है कि बहुप्रशंसित एवं पुरस्कृत उपन्यास 'जोगती' और 'पलटेमार' के बाद शुक्लजी का यह तीसरा उपन्यास है।

लीलाधर मंडलोई पर एकाग्र अंक

भोपाल में 'पहले-पहल' तथा 'वनमाली सृजनपीठ' के तत्त्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में मासिक पत्रिका 'राग भोपाली' के लीलाधर मंडलोई पर एकाग्र अंक का लोकार्पण किया गया। इस अंक में मंडलोई की तीन कृतियाँ 'एक बहुत कोमल तान', 'महज़ शरीर नहीं पहन रखा था उसने' तथा 'रचना आज-युवा कविता' (सम्पादित) संकलित है। विमोचन डॉ० धनंजय वर्मा, प्रभुनाथ सिंह आजमी ने किया।

विष्णु प्रभाकर : संस्मरण गोष्ठी

नई दिल्ली में हिन्दी भवन के संगोष्ठी कक्ष में हिन्दी भवन न्यास समिति तथा चित्रकला-संगम के संयुक्त तत्त्वावधान में मूर्धन्य साहित्यकार दिवंगत विष्णु प्रभाकर की पहली पुण्यतिथि पर संस्मरण गोष्ठी 'विष्णु जी एक : संस्मरण अनेक' का आयोजन किया गया। हिन्दी भवन के मंत्री गोविंद व्यास व चित्रकला-संगम के मंत्री वीरेन्द्र प्रभाकर सहित अनेक साहित्यकारों ने अपने विचार रखकर विष्णुप्रभाकर जी को याद किया।

गोष्ठी में डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी, हिमांशु जोशी, राजकुमार सैनी, बलदेव वंशी, रामशरण जोशी, प्रदीप पंत, महेश दर्पण की सक्रिय भागीदारी रही। संचालन डॉ० हरीश नवल ने किया।

निर्मल वर्मा स्मृति व्याख्यान

नई दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर के सभागार में निर्मल वर्मा के 81वें जन्मदिन के अवसर पर पाँचवाँ स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया। 'पश्चिम और भारत : सम्बन्ध व आत्मबोध' विषय पर व्याख्यान देते हुए वरिष्ठ चिंतक कृष्णनाथ ने आज के समय को पश्चिम का समय बताते हुए कहा कि आज की वैश्विक मंदी सिर्फ आर्थिक नहीं है, यह अंत का आरम्भ है। अगर अवसाद के दिनों में हथियारों की प्रबलता प्रमाणित करने का विचार गहराया तो सभ्यता का अंत करीब है। व्याख्यान की अध्यक्षता कवि कुँवर नारायण ने की।

श्री अंगिरा शोध संस्थान जीन्द के तत्वावधान में साहित्य समारोह 2010 सम्पन्न

श्री अंगिरा शोध संस्थान, जीन्द के तत्वावधान में साहित्य समारोह-2010 स्थानीय महाराजा अग्रसेन कन्या व०मा० विद्यालय जीन्द के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि डॉ० राम भगत लांग्यान, निदेशक डॉ० अंबेडकर स्टडी सेंटर कु०वि०वि० कुरुक्षेत्र रहे। समारोह की अध्यक्षता डॉ० बाबूराम डी०लिट् एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग कु०वि०वि० कुरुक्षेत्र द्वारा की गई।

इस अवसर पर डॉ० दामोदर वशिष्ठ द्वारा सम्पादित 'पण्डित शादीराम ग्रन्थावली', हरियाणा के प्रतिष्ठित कवि, कहानीकार परमानन्द 'अधीर' द्वारा रचित 'पतझड़ के बाद' व 'गाँव गोहर से' (कहानी संग्रह) तथा 'पुरुषोत्तम' (प्रबन्ध-काव्य) और स्व० पं० रामअवतार 'अभिलाषी' द्वारा रचित 'मैं और मैं' तथा 'चालीसवीं निकल गई' (काव्य संग्रह) का विमोचन डॉ० बाबू राम तथा डॉ० बी० लांग्यान के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में हरियाणा के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ० लक्ष्मण सिंह अगरावा को श्री अंगिरा शोध संस्थान द्वारा 'साहित्य-मनीषी' की सम्मानोपाधि तथा श्री महावीर सिंह 'दु:खी', गाँव सुदकैन कलां को 'श्री अभिलाषी स्मृति साहित्य एवं जनसेवा संस्थान करनाल' द्वारा प्रायोजित 'साहित्य-रत्न' की सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया। इन दोनों सम्मानित साहित्यकारों को उत्तरीय व श्रीफल से श्री रामशरण युयुत्सु निदेशक ने सम्मानित किया। तत्पश्चात सम्मान पत्र, शॉल, स्मृति चिह्न तथा प्रत्येक साहित्यकार को 1100-1100 रुपए की धनराशि प्रदान की गयी।

'डॉ० लोहिया और हिन्दी' विषयक संगोष्ठी

साहित्यिक संघ वाराणसी द्वारा 'सोच विचार' के ईश्वरगंगी, वाराणसी स्थित कार्यालय पर आयोजित 'डॉ० लोहिया और हिन्दी' विषयक संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में विचार व्यक्त करते हुए समाजवादी चिन्तक, लेखक तथा सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी श्री कैलाशचन्द्र मिश्र ने कहा कि डॉ० लोहिया के लिए हिन्दी का प्रश्न राष्ट्र एवं राष्ट्रीय संस्कृति का प्रश्न था। वे मानते थे कि हिन्दी की प्रतिष्ठा द्वारा ही भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण सम्भव है।

डॉ० लोहिया हिन्दी के प्रश्न पर महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे। वे अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के विरोधी नहीं थे और इस भाषा पर उनका असाधारण अधिकार भी था किन्तु विदेशी भाषा को विदेशी भाषा के रूप में ही प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। यह उनका दृढ़ मत था। स्वदेशी के मूल्य पर अंग्रेजी की प्रतिष्ठा एक प्रकार की गुलामी है। देश का दुर्भाग्य है कि स्वतन्त्रता के इतने दिनों बाद भी भाषा की यह गुलामी बनी हुई है। स्वतन्त्रचेता लोहिया जीवन की आखिरी साँस तक इस गुलामी के विरुद्ध संघर्षरत रहे।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन स्मृति संगोष्ठी

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की जन्मतिथि के अवसर पर महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के पुस्तकालय कक्ष में कुलपति प्रो० अवधराम के मुख्य आतिथ्य तथा प्रो० चौथीराम यादव की अध्यक्षता में राहुल सांकृत्यायन साहित्य शोध संस्थान, नवापुरा और विद्यापीठ पत्रकारिता विभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें रचनाकारों और विद्वानों ने 'राहुल की रचनाधर्मिता' के आयामों को रेखांकित किया। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि साहित्यकार मनु शर्मा थे। डॉ० रामसुधार सिंह, डॉ० मंजुला चतुर्वेदी, डॉ० अमिताभ तिवारी, डॉ० जितेन्द्रनाथ मिश्र सहित अनेक वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये।

भरुच में पुस्तक पर्व का आयोजन

विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में 23 अप्रैल 2010 को गुजरात के पुरातन-ऐतिहसिक शहर भरुच में 'पुस्तक पर्व' मनाया गया। नेशनल बुक ट्रस्ट और एमिटी स्कूल, भरुच के संयुक्त तत्वावधान में पुस्तक-चर्चा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें गुजरात के विविध प्रान्त से आए गणमान्य वक्ताओं ने जीवन में पुस्तक एवं पठन के महत्त्व को रेखांकित किया।

शिक्षण-संस्था एमिटी स्कूल में दो सत्रों में पुस्तक-चर्चा कार्यक्रम हुआ। सुप्रसिद्ध विचारक एवं पद्मश्री से सम्मानित गुजराती साहित्यकार डॉ० कुमारपाळ देसाई ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। साहित्य-मर्मज्ञ सुश्री मीनल दवे और जानीमानी साहित्यकार एवं दूरदर्शन-अहमदाबाद की भूतपूर्व सहायक निदेशक डॉ० मीनाक्षी ठाकर ने 'पुस्तक बोले छे, सांभळो जी!' शीर्षक अन्तर्गत पुस्तक सम्बन्धी अपने विचार एवं पठन-अनुभवों को व्यक्त करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध कवि एवं गुजरात साहित्य अकादेमी के महामात्र श्री हर्षद त्रिवेदी ने 'पुस्तक न होत तो!' शीर्षक पर रसप्रद शैली में विशद् पुस्तक चर्चा प्रस्तुत की। डॉ० कुमारपाळ देसाई ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पुस्तक की महत्ता और पठन की आदत के महात्म्य के अनेक उदाहरण सामने रखते हुए विशद चर्चा की।

पुस्तक-चर्चा का दूसरा सत्र सायं 6.30 बजे आयोजित हुआ। 'पुस्तक एटले कल्पवृक्ष' विषयक इस सत्र में जाने माने पत्रकार एवं अखबार-पत्रिकाओं के स्तम्भ लेखक श्री कृष्णकांत उनडकट ने वर्तमान समय में पुस्तक की महत्ता एवं अनिवार्यता पर प्रकाश डाला। सुप्रसिद्ध कथाकार, संशोधक एवं संत-साहित्यकार डॉ० निरंजन राज्यगुरु ने पुस्तक की उत्पत्ति से लेकर उसके आदि व आधुनिक युग में उसकी महिमा पर सरल-सुबोध वक्तव्य प्रस्तुत किया। सुप्रसिद्ध लेखिका डॉ० हिमांशी शेलत ने पुस्तक रूपी कल्पवृक्ष के उपकारों को जीवन में सार्थक बनाने के विभिन्न पहलुओं पर टिप्पणी की। एमिटी शिक्षण संकुल के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री रणछोड़ शाह इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे।

जोधपुर में पुस्तक लोकार्पण

जोधपुर के गाँधी शांति प्रतिष्ठान सभागार में **विश्व पुस्तक दिवस** के अवसर पर आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए डॉ० गौड़ ने कहा कि नवीनतम सूचना माध्यमों का सहारा लेते हुए आगे बढ़ना समय की जरूरत है।

मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री रतन लाहोटी ने कहा कि सूचना एवं तकनीकी के इस युग में पुस्तक प्रकाशन की गुणवत्ता में निश्चित ही सुधार हुआ है। इस मौके पर लेखक सुदर्शन कपूर की कृति भारतीय सांस्कृतिक विरासत : एक परिदृश्य, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे द्वारा संकलित व सम्पादित श्रेष्ठ हिन्दी बाल नाटक, चित्रा मुद्गल व मिथिलेश्वर की संकलित कहानियाँ, कश्मीरी भाषा से हिन्दी में अनूदित पुस्तकें शौकत शान की चालाक चूहा तथा सुरैया रसल की बुद्धिमान गौरैया, डॉ० बलदेव सिंह 'बद्दन' की नया सवेरा एवं गौतम शर्मा 'व्यथित' की धियाणा का विमोचन हुआ।

इंदौर में पुस्तक लोकार्पण व लघु कथा पाठ

23 अप्रैल 2010 को **विश्व पुस्तक एवं कॉपीराईट दिवस** के अवसर पर इंदौर के मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति स्थित नेशनल बुक ट्रस्ट के पुस्तक बिक्री केन्द्र में एक साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा हिन्दी में प्रकाशित तीन व सिंधी भाषा की एक पुस्तक का लोकार्पण प्रख्यात लेखिका डॉ० चित्रा मुद्गल के हाथों सम्पन्न हुआ। लोकार्पित पुस्तकें थीं—सिंध की लोककथाएँ (सिंधी तथा हिन्दी), श्रीमती रश्मि रमानी; चिंगारियाँ (संकलन—गुरदेव सिंह सिद्धू) और रावण (अंजनी शर्मा)।

पाठक मंच बुलेटिन का लोकार्पण

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के द्वारा प्रकाशित बच्चों की मासिक पत्रिका 'पाठक मंच बुलेटिन' के अप्रैल 2010 अंक का लोकार्पण प्रख्यात इतिहासकार तथा नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के अध्यक्ष प्रो० विपिन चंद्रा ने किया।

पत्रिका के इस अंक के लिए लेखन एवं चित्रांकन की प्रस्तुति विभिन्न विद्यालयों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं से आए बच्चों ने तीन मूर्ति भवन के चिल्ड्रंस रिसोर्स सेंटर और नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के संयुक्त प्रयासों द्वारा आयोजित कार्यशाला में किया था। प्रो० विपिन चंद्रा ने बच्चों की सराहना करते हुए कहा कि ''बच्चों में पढ़ने की रुचि की कमी नहीं है परन्तु उन्हें मनोरंजक और मार्गदर्शक पठन सामग्री चाहिए।'' इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित लेखिका तथा राष्ट्रीय बाल भवन की पूर्व निदेशक डॉ० मधु पंत ने बच्चों और बड़ों की तुलना करते हुए कहा कि ''हम तो बड़े होते-होते ही अपनी कल्पनाशीलता खो देते हैं। लेकिन बच्चे बहुत कल्पनाशील होते हैं और इतनी छोटी उम्र में अपने भावों को प्रकट करना ही बहुत बड़ी बात है।''

गंगटोक में
पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण कार्यक्रम

नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया द्वारा सिक्किम अकादमी के सहयोग से नेपाली साहित्य परिषद भवन, गंगटोक में पुस्तक प्रकाशन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उद्घाटन अवसर पर इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की महत्ता को व्याख्यायित करते हुए श्री श्रीधर बालान ने देश और विदेश के प्रकाशन परिदृश्य को विस्तार से बतलाया। एक सप्ताह तक चले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में संकाय सदस्य के रूप में श्री श्रीधर बालान, श्री जी०एस० जोली, श्री आर०पी० पोडयाल, श्री बी०एन० वर्मा, श्री सुकुमार दास श्री पारसमणी डांगल, श्री एस०के० मोहंती, श्री जोसेफ मथाई, सुश्री अपराजिता बसु आदि ने प्रकाशन के विभिन्न आयामों की विस्तार से चर्चा की।

'टेम्स की सरगम' का लोकार्पण

मुंबई में श्री राजस्थानी सेवा संघ द्वारा संचालित एसजे जे टी वि०वि० झुंझनू राजस्थान ने सुप्रसिद्ध कथा लेखिका संतोष श्रीवास्तव के सद्य प्रकाशित उपन्यास 'टेम्स की सरगम' का लोकार्पण श्रीमती परमेश्वरी देवी दुर्गादत्त टीबड़ेवाला कॉलेज के प्रांगण में किया। कवि एवं पत्रकार आलोक भट्टाचार्य के संचालन से प्रारम्भ हुए इस उपन्यास का लोकार्पण करते हुए पुष्पा भारती ने कहा कि ''डायना और चंडीदास के अनूठे प्रेम से वर्णित यह उपन्यास अनूठा है जिसमें इतिहास भी धड़क रहा है, और भक्ति-मार्ग ज्ञान-मार्ग का संगम भी है।''

'छत्तीसगढ़ में संस्कृत और संस्कृत में छत्तीसगढ़' पर समीक्षा संगोष्ठी सम्पन्न

''छत्तीसगढ़ में संस्कृत को लोकप्रियता की ऊँचाई तक पहुँचाने में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान एवं विख्यात लेखक आचार्य डॉ० महेशचन्द्र शर्मा का विशिष्ट योगदान है, यह उनके 200 से अधिक पृष्ठ और 70 से अधिक चित्रों-मानचित्रों से सुसज्जित पंचम शोधग्रन्थ 'छत्तीसगढ़ में संस्कृत' से पुनः सिद्ध हो गया है।'' ये विचार हैं हिन्दी-संस्कृत के अध्येता एवं लेखक पं० जयगोविन्द शुक्ल के। पं० शुक्ल, वीणापाणि साहित्य समिति दुर्ग द्वारा डॉ० शर्मा की पाँचवी शोधकृति 'छत्तीसगढ़ में संस्कृत' पर केन्द्रित समीक्षा गोष्ठी के मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। संस्कृत पृष्ठभूमि के सरस कवि एवं प्रकाण्ड पण्डित श्री

गंगाप्रसाद शुक्ल ने गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये।

'मुल्कराज आनंद : रोल एंड एचीवमेंट' पुस्तक का विमोचन

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मुल्कराज आनंद : रोल एंड एचीवमेंट' का विमोचन करते हुए डॉ० कपिला वात्स्यायन ने कहा कि मुल्कराज आनंद हमेशा पुस्तकों के बीच रहे जिनसे उनका सम्बन्ध अंत तक बना रहा। वे एक अक्लांत-अध्येता और जीवट के लेखक थे। आज भी तरोताज़ा हैं उनकी स्मृतियाँ। डॉ० वात्स्यायन ने पुस्तक-लेखक अमरीक सिंह को इस पुस्तक के लेखन के लिये बधाई दी।

जल और जीवन से जुड़ी कविताएँ

''झील एक नाव है/जो धरती में तैर रही है/ लिए हुए इच्छाएँ/कि पानी है तो जिंदगानी है...।'' यशस्वी युवा कवि प्रेमशंकर शुक्ल कुछ ऐसी ही पानीदार कविताएँ लिए साहित्य बिरादरी में पेश आए।

वनमाली सृजनपीठ के नव विकसित साहित्य-परिसर में आयोजित इस आत्मीय काव्य प्रसंग में वरिष्ठ कवि आलोचक राजेश जोशी तथा कथाकार-संस्कृतकर्मी संतोष चौबे ने प्रख्यात कहानीकार-चिंतक स्व० वनमालीजी का उनकी पुण्यतिथि के निमित्त स्मरण किया और प्रेमशंकर की बड़ी झील और पानी पर लिखी शृंखलाबद्ध कविताओं को एक युवा कवि का जिम्मेदार रचनाकर्म बताया। गोष्ठी के पूर्वरंग में प्रसिद्ध रंगकर्मी आलोक चटर्जी ने हिन्दी के दो मूर्धन्य कवियों स्व० शमशेर बहादुर सिंह और अज्ञेय की चयनित कविताओं—असाध्य वीणा, बात बोलेगी, एक पीला पत्ता, मौन तथा औपन्यासिक आदि की पाठ प्रस्तुति कर कविता की महान विरासत को याद किया। इस अवसर पर वनमाली सृजनपीठ के नवविकसित अध्ययन केन्द्र का शुभारंभ भी हुआ।

'फिल्मों तक सीमित न रहे भोजपुरी'

आगरा। महाकवि सूरदास की भूमि पर जुटे कबीर प्रान्त के मनीषी। भोजपुरी भाषा की मिठास ने किया सभी को अभिभूत। वक्ताओं ने चिंता व्यक्त की कि भोजपुरी केवल लोकसंगीत और फिल्मों तक सीमित न रहे, बल्कि इसके साहित्य को भी समृद्ध किया जाये। सूरसदन में पूर्वांचल सांस्कृतिक सेवा समिति की ओर से आयोजित दो दिवसीय भोजपुरी सम्मेलन का 22 मई को प्रारम्भ हुआ। इसमें कई देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें मारीशस से 12, सिंगापुर से 4, कनाडा, फिजी और मलेशिया से 2-2, सूरीनाम से एक थे। इनके अलावा देश के विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि भी थे। मुख्य अतिथि थीं मारीशस से आयीं डॉ० सरिता बुधू। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि देश-विदेश में भोजपुरी भाषा का विकास होने के बावजूद युवा पीढ़ी इस भाषा को बोलने में संकोच करती है। यह समस्या भोजपुरी के विकास में बड़ी चुनौती है। अनतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी ने भोजपुरी के विकास की गति धीमी होने पर अफसोस जाहिर किया। उन्होंने कहा कि भोजपुरी केवल लोकगीत और फिल्मों तक सिमट कर न रह जाये। भोजपुरी साहित्य पढ़ने वालों की संख्या काफी कम है। गाँवों में तो यह भाषा अपनी ऊर्जा से बढ़ रही है। लेकिन शहरों में उसका विकास थम गया है।

अखिल भारतीय नारी साहित्यकार सम्मेलन

17-18 अप्रैल को अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, राजस्थान की ओर से आयोजित नारी साहित्यकार सम्मेलन कोटा में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन का शीर्षक था नारी चिन्तन से जुड़ा 'वर्तमान दशक का नारी साहित्य और भारतीय जीवन मूल्य'। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलवंत जानी ने की, मुख्य अतिथि डॉ० धर्मपाल मैनी व विशिष्ट अतिथि डॉ० मृदुला सिन्हा थीं। अतिथियों ने कार्यक्रम की स्मारिका 'हमारा दृष्टिकोण' का विमोचन किया। तत्पश्चात् श्रीमती रचना गौड़ 'भारती' के काव्य-संग्रह 'नई सुबह' का लोकार्पण किया गया। कोटा की युवा रेखांकनकार सुश्री यामिनी गौड़ को श्री बलवंत जानी एवं श्रीमती मृदुला सिन्हा द्वारा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

प्रथम सत्र में 'वर्तमान दशक का नारी साहित्य चिंतन' विषय पर परिचर्चा हुई। इसमें मुख्य अतिथि डॉ० तारा लक्ष्मण गहलौत थीं। दूसरे सत्र में 'कथा साहित्य में नारी' को लेकर चर्चा हुई। मुख्य अतिथि श्री जगदीश तोमर थे। तीसरे सत्र में हिन्दी कविता पर चर्चा हुई। मुख्य अतिथि श्रीमती मृदुला सिन्हा व विशिष्ट अतिथि श्री कैलाश चंद थे।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के अध्यक्ष डॉ० सूर्यप्रकाश दीक्षित थे, अध्यक्षता श्रीमती मृदुला सिन्हा ने की तथा श्री बलवंत जानी ने अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र में परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए। 'डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ कहानी-संग्रह प्रथम पुरस्कार' श्री जगदीश तोमर को 'अंतहीन यात्रा' के लिए, द्वितीय पुरस्कार श्री राधेमोहन राय को 'बही लिखकर क्या होगा?' और डॉ० अहिल्या मिश्रा को 'मेरी इक्यावन कहानियाँ' के लिए; 'श्री भाकुदेव शास्त्री निबन्ध-संग्रह पुरस्कार' डॉ० गार्गीशरण मिश्र 'मराल' को 'आधुनिक विज्ञान और आध्यात्मिकता' के लिए; 'स्व० घनश्याम दास बंसल स्मृति हिन्दी काव्य-संग्रह प्रथम पुरस्कार' डॉ० रामलाल स्नेही शर्मा को 'मेले में यायावर' के लिए व द्वितीय पुरस्कार डॉ० रेणु शाह को 'उजास के पल' के लिए; 'श्रीमती सरला अग्रवाल कहानी प्रथम पुरस्कार' सुश्री संगीता माथुर को 'समीकरण के लिए' तथा द्वितीय पुरस्कार सुश्री भावना शर्मा को 'वापसी' कहानी के लिए दिया गया। 'अखिल भारतीय नारी साहित्यकार सम्मेलन प्रथम पुरस्कार' डॉ० अनीता गुप्ता, द्वितीय पुरस्कार श्रीमती फ्रांसिस्का कुजूर व तृतीय पुरस्कार श्रीमती शशि प्रभा शर्मा को दिया गया। सभी विजेताओं को नकद राशि, शॉल व प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत-सम्मानित किया गया।

'बतरस' की संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों **विश्व पुस्तक दिवस** के अवसर पर साहित्यिक संस्था 'बतरस' एवं श्री खरका महावीर एजुकेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 'पठनीयता का संकट' विषय पर एसएनडीटी कॉलेज, घाटकोपर, मुम्बई में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजश्री फिल्म प्रोडक्शन के निदेशक श्री राजकुमार बड़जात्या, 'दोपहर का सामना' के सम्पादक श्री प्रेम शुक्ल, 'कुतुबनुमा' की सम्पादक श्रीमती राजम पिल्लै, 'क्षितिज' के श्री संजय भारद्वाज, व्यंग्यकार श्री अनंत श्रीताली सहित सर्वश्री अक्षय जैन, रमन मिश्र, हस्तीमल हस्ती, कैलाश सेंगर, शशिभूषण श्रीवास्तव व पवन तिवारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

'कनुप्रिया' के अंशों का प्रभावी मंचन

विगत दिनों मुम्बई में सुप्रसिद्ध साहित्यकार स्व० डॉ० धर्मवीर भारती के जन्मदिन पर उनकी कालजयी कृति 'कनुप्रिया' के अंशों का प्रभावी मंचन किया गया। 'अरात्रिका' की निवेदिता मुखर्जी, कुमार विजय और उनकी टीम ने कृति का मंचन किया। डॉ० भारती की पत्नी डॉ० पुष्पा भारती ने उनकी यादों को जीवन्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री हरीश, रेखा भिमानी, राजन और प्रतिपथ ने योगदान दिया।

आत्मकथा लेखन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग द्वारा 'हिन्दी साहित्य में समकालीन आत्मकथा लेखन सृजन एवं दृष्टि' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी में प्रसिद्ध कथाकार श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा ने आत्मकथा को सक्षम व कारगर माध्यम बताया। प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती अनामिका विशिष्ट अतिथि थीं। विभागाध्यक्ष डॉ० सुनीता साखरे ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रथम सत्र में चर्चित कथाकार श्रीमती सुधा अरोड़ा ने आत्मकथा की चुनौतियों पर चर्चा की। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रो० केशव प्रथमवीर ने दिया व संचालन डॉ० उषा मिश्र ने किया। सुश्री गीता यादव ने प्रो० रामदरश मिश्र की आत्मकथा 'सहचर है समय' का मूल्यांकन किया। डॉ० प्रकाश

उदय ने पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' की विख्यात आत्मकथा 'अपनी खबर' पर समीक्षा प्रस्तुत की। 'कुतुबनुमा' के सम्पादक श्री राजम पिल्लै ने आत्मकथाकारों के अंतर्विरोध पर प्रकाश डाला।

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री स्मृति व्याख्यान सम्पन्न

2 मई को कोलकाता के महाजाति सदन में श्री बड़ा बाजार कुमार सभा पुस्तकालय की ओर से आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की स्मृति में एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। प्रख्यात साहित्यकार प्रो० कृष्णबिहारी मिश्र ने प्रो० शास्त्री के शील तथा पाण्डित्य की चर्चा करते हुए कहा कि वे अपने जमाने में अप्रतिम थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती शशि मोदी ने किया। अध्यक्षीय भाषण भारतीय भाषा परिषद के निदेशक डॉ० विजयबहादुर सिंह ने व स्वागत भाषण डॉ० प्रेमशंकर त्रिपाठी ने दिया।

द्वारिकेश नेमा के नवीन कहानी-संग्रह 'हीरामन अमृत्य सेन और अन्य कहानियाँ' पर चर्चा

भोपाल। प्रख्यात उपन्यासकार मंजूर एहतेशाम ने कहा कि नेमा की कहानियों के बयान लाउडनेस के बजाए आहिस्तगी से पेश आते हैं। पाठकों को बाँधे रखने में सक्षम ये कहानियाँ कोई ऐलान नहीं करतीं, बल्कि दिल पर आत्मीय दस्तक देती हैं। जिसमें नारे के बजाए बदलाव का आग्रह दिखाई देता है। आज हमारी जिन्दगी में जो उबाऊपन है, समस्याएँ हैं, इस वजह से जो कई महत्त्वपूर्ण तर्क छुप गए हैं, ये कहानियाँ उन्हें चिह्नित और इंगित करती हैं। उन्होंने 'हीरामन अमृत्य सेन' 'हाऊ इज इट्', 'खाली मौत' सहित संग्रह की कुछ अन्य कहानियों का जिक्र किया और कहा कि इन कहानियों को हड़बड़ी में नहीं पढ़ा जा सकता। ये सोचने के लिए वक्त माँगती है।

कविवर सुमित्रानन्दन पन्त की 110वीं जयन्ती पर संगोष्ठी

छायावादी युग के महान् कवि पण्डित सुमित्रानन्दन पन्त की 110वीं जयन्ती साहित्यानुशीलन समिति के तत्वावधान में रविवार, दिनांक 23 मई 2010 को मनाई गई। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के उप निदेशक डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

समिति की ओर से मुख्य अतिथि एवं आमंत्रित विद्वानों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। स्वागत-भाषण देते हुए समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने कहा कि हिन्दी के साहित्याकाश में सुमित्रानन्दन पंत एक देदीप्यमान नक्षत्र की तरह विद्यमान हैं। ज्ञानपीठ का सर्वोच्च सारस्वत सम्मान प्राप्त करने वाले हिन्दी के पहले कवि थे पन्तजी, जिन्होंने पल्लव, वीणा, युगवाणी, खादी के फूल, उत्तरा और लोकायतन जैसी महनीय कृतियाँ देकर राष्ट्रभाषा का गौरव बढ़ाया। संगोष्ठी में चेन्नई के जिन विद्वान् समीक्षकों ने अपने शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किये, वे थे डॉ० एम० शेषन, डॉ० एस० सुब्रह्मण्यन्, डॉ० इंदरराज बैद, डॉ० निर्मला मौर्य और डॉ० विद्या शर्मा। इस अवसर पर डॉ० शौरिराजन और डॉ० पी०के० बालसुब्रह्मण्यम ने कविवर पंत के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

'हिन्दी का भविष्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

जमशेदपुर में मासिक 'इस्पात भारती' ने एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन श्री कृष्ण सिन्हा सभागार में किया। प्रसिद्ध समीक्षक डॉ० नामवर सिंह मुख्य अतिथि थे। कोल्हान विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ० एस० रजी ने अध्यक्षता की। विषय था—'हिन्दी का भविष्य एवं भविष्य की की हिन्दी'।

विषय प्रवेश कराते हुए झारखण्ड के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० बच्चन पाठक 'सलिल' ने कहा कि हिन्दी की वर्तमान उपेक्षा देखकर इसके भविष्य के प्रति आशंका उत्पन्न होती है, सरकारी क्षेत्र में नौकरी नहीं है, कारपोरेट जगत में अंग्रेजी का वर्चस्व है।

डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि सललि जी की तरह कई साहित्यकार हिन्दी के भविष्य के प्रति चिन्तित हैं। मैं हिन्दी का भविष्य नहीं, राष्ट्र का भविष्य सुन्दर देखना चाहता हूँ।

डॉ० रजी ने कहा कि हिन्दी में उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का संतुलित प्रयोग हो। विश्व विद्यालय भी हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करे।

'उत्तर आधुनिक विमर्श और समकालीन साहित्य' पर संगोष्ठी सम्पन्न

हैदराबाद, 25 अप्रैल 2010। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के विश्वविद्यालय विभाग में नवगठित साहित्य संस्कृति मंच और स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद के तत्वावधान में 'उत्तर आधुनिक विमर्श और समकालीन साहित्य' विषयक एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए 'स्वतंत्र वार्ता' के सम्पादक डॉ० राधेश्याम शुक्ल ने कहा कि उत्तर आधुनिकता आधुनिकता की प्रतिक्रिया में आरम्भ हुई और उससे बहुत आगे बढ़ गई तथा इसकी अवधारणा विज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य और भाषा सभी के साथ गुंथी हुई है।

बीज व्याख्यान शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के प्रो० अर्जुन चह्वाण ने दिया। उन्होंने कहा कि उत्तर आधुनिकता अनेक प्रवृत्तियों का पुंज है जिसमें एक ओर अतियथार्थवाद है तो दूसरी ओर यह चिन्तन कि जो समूह कल तक हाशिये पर थे वे आज केन्द्र में आ रहे हैं।

संस्थान के कुलसचिव प्रमुख हिन्दी भाषा चिन्तक प्रो० दिलीप सिंह ने उत्तर आधुनिकता की व्याख्या संरचनावाद और विरचनावाद के सन्दर्भ में करते हुए विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' को इस प्रवृत्ति का प्रतिनिधि उपन्यास बताया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के रूसी विभाग के आचार्य डॉ० जगदीशप्रसाद डिमरी ने उत्तर आधुनिकता के इतिहास पर प्रकाश डाला। उन्होंने माँग की कि हिन्दी के साहित्य चिंतक अपनी देशी जमीन अर्थात् संस्कृत काव्यशास्त्र के आधार पर आधुनिक युग के नए साहित्यिक मापदण्ड तैयार करें।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ० मृत्युंजय सिंह ने संगोष्ठी के विषय की पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुए यह सवाल उठाया कि आलोचना और विमर्श किस तरह अलग हैं तथा उत्तर आधुनिकता का आधुनिकता से क्या रिश्ता है ?

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो० एम० वेंकटेश्वर ने की। अपने सम्बोधन में उन्होंने याद दिलाया कि उत्तर आधुनिकता की शुरुआत वास्तुकला से हुई जिसका बाद में चित्रकला, संगीत, साहित्य और अन्य ज्ञान क्षेत्रों में प्रचलन हुआ।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ० टी० मोहन सिंह ने उत्तर आधुनिक विमर्श की विसंगतियों पर ध्यान दिलाया और कहा कि यदि बुद्धिजीवियों को वास्तव में दलितों और आदिवासियों से थोड़ा भी प्रेम है तो उन्हें वातानुकूलित कमरों से निकलकर इस देश के गाँवों में जाकर कुछ काम करना चाहिए—सिर्फ विमर्श करते रहने से कोई परिवर्तन नहीं आएगा।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो० दिलीप सिंह ने कहा कि उत्तर आधुनिकता कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे आतंकित हुआ जाए क्योंकि यह एक शाश्वत सत्य है कि सारे विमर्श, कोई भी वर्ग या कोई गतिशील समाज स्थिर नहीं रह सकता, लेकिन उसके टुकड़े भी उतने ही किए जा सकते हैं जितने की वह अनुमति देगा। इसलिए यह सोचना कि उत्तर आधुनिक विमर्श हमारी संस्कृति को तोड़ देगा, भ्रांति के अलावा कुछ और नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि यदि साहित्य, समाज, मीडिया, कला या फिल्मों में कुछ ऐसा प्रस्तुत किया जा रहा है जो गलत है तो उस पर भी विमर्श होना चाहिए।

समाकलन करते हुए प्रो० अर्जुन चह्वाण ने कहा कि किसी भी विमर्श की तरह उत्तर आधुनिकता में भी न तो सब कुछ अच्छा है न सब कुछ खराब इसलिए हमें भारतीय सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए उसकी स्वीकार्य बातों को ग्रहण करना चाहिए। इस अवसर पर विद्वानों ने अपने-अपने शोधपरक आलेख भी प्रस्तुत किये।

आगामी प्रकाशन

साधनापथ

लेखक

पद्मविभूषण महामहोपाध्याय
डॉ० पं० गोपीनाथ कविराज

अनुवादक

एस०एन० खण्डेलवाल

प्रात:स्मरणीय महामहोपाध्याय डॉ० पं० गोपीनाथ कविराजजी के इत:स्तत: बिखरे उपदेश वाक्यों तथा लेखों के अनुवाद का यह संग्रह एक प्रकार से भले ही क्रमबद्ध रूप से विषय की आलोचना का रूप न ले सके, तथापि इसकी प्रत्येक पंक्ति में स्तरानुरूप पथ का सन्धान मिलता रहता है। यहाँ पथ का तात्पर्य आन्तरिक पथ है। बाह्य पथ यह संसार है। सम्पूर्ण संसार में से हमारी इस पृथ्वी का चक्रमण मनुष्य साध्य है। आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से इस विशाल पृथ्वी का प्रसार हम नाप लेते हैं। उसकी परिक्रमा अनायास कर लेते हैं। वह सब एक पथ का आश्रय लेने से होता है। परन्तु अन्तर्जगत् जो हमारे अस्तित्व में स्थिति है, वह भले ही इस साढ़े तीन हाथ की देह का जगत है, परन्तु वह अन्तर्जगत् आज भी हमारे लिए अज्ञात है। क्योंकि उसमें प्रवेश करने पर कोई पथ खोजे भी नहीं मिलता। हजारों-हजारों किलोमीटर की इस भूमण्डल की परिक्रमा उतनी कठिन नहीं है, जितना कठिन है इस अन्तर्जगत के पथ पर एक बिन्दु भी अग्रसर हो सकता। हम बाह्य जगत् के गुरुत्वाकर्षण तथा वायुमण्डल के अवरोध को पार करते हुए उसमें भले ही आगे बढ़ते चले जाते हैं, परन्तु अन्तर्जगत के मध्याकर्षण से पार पा सकना विज्ञान के लिए भी दु:ष्कर है। 'बलदाकृष्य मोहाय' मोहरूपी मध्याकर्षण बलात् आकृष्ट करके हमें पथ के आरम्भ में ही रोक देता है। हम इस दुरन्त अवरोध से, मध्याकर्षण से छुटकारा पाये बिना अन्तर्जगत् में कैसे अग्रसर हो सकते हैं? अत: इसके लिए पहले साधन के पथ पर चलना होगा। तभी हम कालान्तर में अन्तर्जगत् के अज्ञात परन्तु प्रकाशोज्ज्वल पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

इस संकलन ग्रन्थ में ऐसा ही कुछ दिशा निर्देश है। पहले साधन पथ, तदनन्तर अन्त:पथ। अथवा दोनों पर ही युगपत रूप से एक साथ भी चालन हो सकता है। इसका स्वरूप कृपा सापेक्ष है। गुरुकृपा, भगवत् कृपा तथा शास्त्र कृपा! भगवत् कृपा का कोई नियम नहीं है, गुरु कृपा आज के परिवेश में और भी दुष्कर हो गई है। सद्गुरु का पता नहीं चलता, वैसे तो गुरु नगर-नगर, गली-गली भरे पड़े हैं। त्रेता तथा सत्ययुग में भी इतने गुरु नहीं रहे होंगे! परन्तु सद्गुरु...? अन्त में बचती है शास्त्रकृपा। सत्शास्त्र वह है जिसे स्वानुभूति से लिखा, बताया सुनाया गया हो। केवल शब्दों का जाल न हो। जिसमें 'आखिन की देखी' की छवि झलकती हो।

यह 'साधना पथ' तथा इसमें प्रतिपाद्य प्रत्येक विषय प्रत्यक्ष पर आधारित है। स्वानुभूत सत्य है। अत: शास्त्र है। इसलिऐ इसके अनुशीलन अध्ययन से शास्त्रकृपा प्राप्त हो जाती है। जो इस अनुभूति सागर में जितना गोता लगा सकेगा, वह उतने ही रत्न का, कृपारूपी मुक्ता का आहरण कर सकेगा। यह नि:संदिग्ध है।

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी / गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

तीन हजार वर्ग फुट में स्थापित पुस्तकों का विशाल शोरूम

विशालाक्षी भवन,
चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में),
वाराणसी-221001
(उ०प्र०)

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

साहित्य, भाषा-विज्ञान, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि। अध्यात्म, योग, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, मनीषी-संत-महात्मा जीवनचरित, धर्म एवं दर्शन, भारत विद्या, इतिहास, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व, अभिलेख, मुद्राएँ, संग्रहालय विज्ञान, वास्तु कला, जनसंचार, पत्रकारिता, संगीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्धशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान, स्त्री-विमर्श, मनोविज्ञान, भूगोल, भू-विज्ञान, विशुद्ध विज्ञान जैसे- फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलॉजी, बॉटनी, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साइंस आदि। लगभग सभी विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान की ओर सतत प्रयासरत।

इंटरनेट की वैश्विक दुनिया में स्थापित विशाल वर्चुअल शोरूम

With Online Shopping facility
http://www.vvpbooks.com
by Credit Card also

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु सुविधानुसार पधारें, लिखें, फोन/फैक्स करें, ई-मेल करें अथवा वेबसाइट का अवलोकन कर ऑनलाइन पुस्तकों का आदेश करें।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

जीवन पाथेय (निबन्ध संग्रह), विनोदशंकर गुप्त, प्रकाशक : अलंकार प्रकाशन, 3611, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100/- रु० मात्र

× × × हिन्दी के प्रतिष्ठित निबन्धकार स्व० गुलाबराय के पुत्र श्री विनोदशंकर गुप्त ने भारतीय पुरातत्त्व विभाग से अवकाश ग्रहण करने के बाद अपने पिता की कीर्ति को अक्षुण्ण रखते हुए साहित्य-सेवा का व्रत लिया है और इसी दिशा में उनके लिखे निबन्धों का प्रकाशित संग्रह है जीवन पाथेय। घर-परिवार, समाज, बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएँ, दहेज-प्रथा आदि के साथ मनोवृत्तिगत घटकों के अंत:विश्लेषण से उद्भूत ये निबन्ध शिक्षाप्रद भी हैं प्रेरणापरक भी।

सर्वमंगला (हाइकु प्रबन्ध काव्य), नलिनीकांत, कविताश्री प्रकाशन, उत्तर बाज़ार, अंडाल, प० बंगाल-713321, द्वितीय संस्करण : 2009, मूल्य : यथा इच्छा

× × × हाइकु-छंद के कवि नलिनीकांत का काव्य 'सर्वमंगला', 'श्री दुर्गासप्तशती' के 'उत्तर चरित' के आधार पर रचित कवि की आस्था का अंत: उद्गीथ है। त्रिगुणात्मिका-प्रकृति से उत्पन्न देव, दानव, नाग, यक्ष, किन्नर, मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंगादि भूत-मात्र उसी सर्वमंगला मातृ-शक्ति से संचालित हैं। मनुष्य की प्रवृत्तियों के प्रारूप हैं देवता और दानव, जिनका पौराणिक संघर्ष आज भी प्रासंगिक है। काव्य के अंत में इसी उद्बोधन को रेखांकित किया गया है × × × ''देव दैत्य का, निवास-स्थान सदा, मनुष्य होगा। चाहे मनुज, अब देव बने या, दनुज रहे।''

तिमिरांचला (कविता-संग्रह), डॉ० तारा सिंह, मीनाक्षी प्रकाशन, एम०बी० 31/2बी, गली नं० 2, शकरपुर, दिल्ली-110092, प्रथम संस्करण : 2010, मूल्य : 600/-रु० मात्र

× × × इस कविता-संग्रह की पुरोभूमिका के तौर पर 'अपनी बात' के अन्तर्गत कवियित्री ने अपनी रचनात्मक छटपटाहट व्यक्त की है। इसी क्रम में उसका कथन है कि मानव जाति प्रलयवेग से किस ओर जा रही है और आगे चलकर मानव सभ्यता का भविष्य क्या होगा, हमारा मानव समुदाय धरती का भावी निर्माण किस दिशा में करना चाहता है, सब मिलाकर इस अनित्य जगत में नित्य की खोज 'तिमिरांचला' है। कविता में यही बात × × ''मनुज जिस व्योम को छूने ललक रहा / जिसे अपने जीवन-उत्स का उद्गम समझ रहा /वहाँ कोई अमृत की सरिता नहीं बहती।''

पर्यावरणीय जीवन, ओमप्रकाश त्रिपाठी, लोकरुचि प्रकाशन, सोनभद्र-231216, प्रथम संस्करण : 2007, मूल्य : 125/-रु०

× × × नदी, पर्वत, वृक्ष, पौधे, सूर्य, चन्द्र आदि प्राकृत-तत्त्वों की भी उपासना करने वाली भारतीय संस्कृति का 'जन-गण-मन', अपनी ही जनसंख्या के विस्फोट के कारण स्वयं प्रकृति का अंध-दोहन करते हुए अपने ही पर्यावरण में प्रदूषण फैला रहा है। यह महाविनाश / प्रलय की पूर्व सूचना है। समग्र विकास की अवधारणा को एक सम्यक् संतुलन द्वारा नियंत्रित एवं संचालित करना होगा। इस हेतु विश्व-स्तर पर जन-जागृति की जरूरत है। इसी दिशा में एक प्रयास है प्रस्तुत पुस्तक, जिसकी आलोचना नहीं, स्वागत किया जायेगा।

चन्द्र मल्लिका (नाटक), हर्ष नारायण 'नीरज', प्रकाशक : जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता, सदर बाजार, मथुरा-281001, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 125/-रु० मात्र

××× आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रथम पुरुष भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और उनकी प्रियतमा मल्लिका के चरित्र को लेकर लिखा गया नाटक कवित्व की व्यंजना और जीवन की कठोरता के रेखांकन का समवेत प्रयत्न है। यदि लेखक अपनी शोध-दृष्टि को और गहरे जाने देता, भारतेन्दु की रचनाओं में ही निहित सन्दर्भों की तलाश करता और नाट्यभाषा को उस युग के अनुकूल ही रखता तो यह रेखांकन और भी प्रमाणिक बन सकता था।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 **जून 2010** **अंक : 6**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)